चतुर्थ अध्याय

आलोच्य कहानियों में चित्रित नारी का मनोविज्ञान

:चतुर्थ अध्याय :

``आलोच्य कहानियों में चित्रित नारी का मनोविज्ञान।``

विषय प्रवेश :-

आधुनिक युग बुद्धिप्रधान युग माना जाता है। किसी भी बात को आज का विचारशील मानव सहज स्वीकार नहीं करता, अपितु उसे तर्क की कसौटी पर कसता है। वैज्ञानिक प्रगति के कारण आज मानव आस्था और विश्वास के कारण कोई तथ्य स्वीकार नहीं करता।

आधुनिक युग में जीवन-जगत् को देखने की एक पूर्ण वैज्ञानिक एवं बौद्धिक दृष्टि प्राप्त होने के कारण नित नये-नये सत्यों का उद्घाटन होता जा रहा है। अत: भ्रांतियों पर आधारित प्राचीन अंधविश्वासों की शृंखलाएँ टूटती जा रही हैं। स्पष्ट है कि अन्य सभी बातों की तरह साहित्य के क्षेत्र में भी परिवर्तन होते गए हैं। साहित्य में कई नए प्रयोग होने लगे और कविता के भावात्मक सदंर्भ में परितर्वन आने लगे हैं। जीवन और जगत् के प्रति इस वैज्ञानिक दृष्टिकोन ने सभी ओर हलचल मचा दी है। सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और साहित्यिक आदि समस्त विषयों का परीक्षण अब वैज्ञानिक धरातल पर होने लगा है।

विज्ञान की सबसे बड़ी और महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यही मानी जा सकती है कि व्यापक दृष्टि के बीच मनुष्य ने अपनी सत्ता और ताकद को पहचाना है। वास्तव में इसी वैज्ञानिक दृष्टि के कारण जीवन के शाश्वत और अशाश्वत तथा उदात्त और अनुदात्त तत्वों के पारस्पारिक संबंधों को अधिक वैज्ञानिक दृष्टि से परखने में मनुष्य प्रवृत्त हो गया है।

साहित्य में रचनाकार जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर करता रहता है। साहित्य की रचना पहले होती है, व्यक्ति के मनोभावों के स्वरूप पहले सामने आते हैं और मनोविज्ञान का जन्म उसके बाद होता है। ``भावों और मनोविकारों के स्वरूप परिचय के लिए कवियों की वाणी का अनुशीलन जितना उपयोगी है, उतना मनोवैज्ञानियों का निरूपण नहीं।``[1]

प्रारंभिक काल में साहित्य के अंतर्गत मनोभावों के सूक्ष्म विवेचन का अभाव था। परंतु आधुनिक युग में साहित्य के अंतर्गत मनोभावों का सूक्ष्म विवेचन तथा विश्लेषण भी समाविष्ट हो गया है।

हिंदी साहित्य तेजी के साथ स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर बढ़ने के कारण उक्त विशेषताओं का अध्ययन महत्व बढ गया है। हिंदी काव्यधारा छायावादी काव्यधारा के युग से ही मनोविज्ञान के निकट होती जा रही है। वह स्थूल घटनाओं की अपेक्षा मनोजगत के रहस्यों का उद्‌घाटन तेजी के साथ कर रही है। अब स्थूल घटनाओं का उद्‌घाटन कवि या लेखक उसी सीमा तक करता है, जहाँ तक वह अंतर्गत के उद्‌घाटन में सहायक होता है। अत: कहना न होगा कि मनोविज्ञान के विकास के साथ-साथ साहित्य पर उसके पड़े प्रभाव के कारण बाह्य जगत् से हटकर अंतर जगत् में आंकने की प्रेरणा प्राप्त कर चुका है। वर्तमान कलाकार व्यक्ति के अंतस्थ में कारण रूप में विद्यमान, प्रवृत्तियों, संवेगों मनोभावों आदि को प्रत्यक्ष प्रकट करना अवश्यक ही नहीं, अनिवार्य समझता है। वह इस तथ्य को महत्त्व नहीं देता कि कोई बड़ी घटनाएँ ही हमारे मन को अधिक शक्तिशाली रूप से प्रभावित करती हैं।इसके विपरीत जीवन की प्रत्येक छोटी बड़ी घटना अपना प्रभाव मानव के मन:पटल पर छोड़ जाती है। ऐसा उसका विश्वास हो गया है। और ऐसा होने का कारण साहित्य में प्रवेश के कारण ही साहित्यकार तथा कवि मनुष्य के जीवन की छोटी-सी-छोटी घटना से प्रभावित होता है। मनोविज्ञान के प्रभाव के कारण ही कलाकार व्यक्ति के क्रिया-कलापों का अभ्यंतर से संबंध स्थापित करते हैं क्योंकि मनोभावों का उत्थान, पतन तथा मानसिक क्रियाएँ कोई स्वतंत्र सत्ता नहीं रखती और आलोचक भी मनोविज्ञान के सहारे मन के विविध क्रिया-कलापों को उजागर करते हुए व्यवहार को संचलित करनेवाले विविध सूत्रों पर प्रकाश डालता है। अत: स्पष्ट है कि मनोविज्ञान के कारण न केवल हिंदी साहित्य बल्कि पूरे विश्व के साहित्य को एक नई दिशा प्राप्त हो गयी है।

मनोविज्ञान का अर्थ :-

हिंदी में मनोविज्ञान का प्रयोग सामान्यत: अंग्रेजी `साइकालॉजी` (Psychology) के पर्याय के रूप में किया जाता है, तथा यह प्राय: उन्हीं अर्थों को सूचित करता है जो `साइकालॉजी` में है। 'Psychology' शब्द 'Psyche' (आत्मा) एवं 'logas' (विज्ञान या विचार विमर्श) के योग से बना है, अत: इस दृष्टि से यह `आत्मा का विज्ञान` या आत्मासंबंधी विज्ञान का द्योतक सिद्ध होता है किंतु आधुनिक युग में इसका यह अर्थ प्रचलित नहीं है। प्राचीन युग में यूनानी आचार्यों ने अवश्य ही इसे `आत्मा का विज्ञान` माना था, किंतु अब तो आत्मा का आस्तित्व ही लुप्त हो गया है। विशेषत: विज्ञान के क्षेत्र में `आत्मा` शब्द निरर्थक है, ऐसी स्थिति में यह स्वाभाविक ही था कि 'Psychology' शब्द का अर्थ भी परिवर्तित हो। अब इसे सामान्यत: मन, चेतना और व्यवहार से ही संबंधित माना जाता है।

मनोविज्ञान की परिभाषाएँ :-

पहले 'Psychology' शब्द `आत्मा का विज्ञान` इस अर्थ को ग्रहण करता था। वैज्ञानिक प्रगति के कारण इस विचार में भी परिवर्तन हो गया और `आत्मा का विज्ञान` इस संकुचित अर्थ से निकालकर मनोविज्ञान मन, चेतना और व्यवहार से संबंधित माना जाने लगा और तब से इसकी परिभाषा मन में निर्माण होनेवाले उथल-पुथलों को लेकर की जाने लगी। फिर भी वास्तविकता तो यही है कि मनोविज्ञान की कोई परिभाषा देना मुश्किल है क्योंकि मन की सूक्ष्म गतिविधियों की नित्य नयी परते खुलती हैं। मनोविज्ञान तो एक विकसनशील अध्ययन प्रक्रिया है जिसके आधार पर मन की गतिविधियों को कार्य-कारण शृंखला में बांधने का प्रयास किया जाता है। जैसे-जैसे विज्ञान ने प्रगति की उसी प्रकार साहित्य ने भी प्रगति की और साहित्य में मनोविज्ञान जैसी नई वैज्ञानिक धारा ने प्रवेश किया। समय-समय पर मनोविज्ञान का विकास होता गया। उसी के अनुसार समय-समय पर मनोवैज्ञानिकों ने अपने चिंतन, मनन, परीक्षण एवं अध्ययन के आधार पर जो परिभाषाएँ दी हैं, यहाँ उन्हीं को उधृत करते हुए मनोविज्ञान की व्याख्या करने का प्रयास किया है -

1. प्लेटो :-

``मनोविज्ञान आत्मा का विज्ञान है।``[1]

प्लेटो की इस परिभाषा में सिर्फ आत्मा को ही स्थान दिया गया है। वैज्ञानिक प्रगति के कारण हम आत्मा का कोई अस्तित्व नहीं मानते अत: प्लेटो की प्रस्तुत परिभाषा पूर्ण रूप से अधूरी है।

2) मैक्डुगल :-

``मनोविज्ञान मानव-मन (मस्तिष्क) का विज्ञान है।``[3]

मैक्डुगल के अनुसार मनोविज्ञान मानव-मन (मास्तिष्क) का विज्ञान है लेकिन मानव के शरीर में मन का वस्तुरूप में कोई अस्तित्व नहीं है। अगर मन की जगह `मस्तिष्क` को समझा जाए तो मनोविज्ञान को मास्तिष्क के कार्य व्यापारों का विज्ञान ही समझा जाएगा, जब कि मनोविज्ञान की व्याप्ति बहुत बड़ी है। अत: यह परिभाषा भी अधूरी है।

3. वाटसन :-

`मनोविज्ञान-व्यवहार का विज्ञान है।``[4]

वाटसन महोदय ने मनोविज्ञान को सिर्फ व्यवहार तक ही सीमित रखा है। उनके अनुसार मनुष्य के दैनिक व्यवहार को ही मनोविज्ञान कहा जा सकता है जबकि मनुष्य के व्यवहार करने के कार्य में मास्तिष्क का बहुत बड़ा योग होता है। अत: यह परिभाषा भी अधूरी है। पिल्सबरी ने भी वाटसन की तरह व्यवहार को ही मनोविज्ञान माना है। इन दोनों चिंतकों की परिभाषा एकांगी है।

4. मुन्न :-

``मनोविज्ञान अनुभव और व्यवहार का एक ऐसा विधायक विज्ञान है जिसकी व्याख्या अनुभव के आधार पर की जा सकती है।``[5] अपनी इस परिभाषा में मुन्न ने मानवी व्यवहार को ही रखा है और उसके साथ अनुभव को जोड़ दिया है। तात्पर्य, मानव अपनी दिनचर्या में जीवन अनुभवों को ग्रहण करता है और उसका अपने व्यवहार में प्रयोग करता है। उसे ही मनोविज्ञान कहा गया है। मुन्न ने मनोविज्ञान की परिभाषा में अनुभव के साथ व्यवहार को जोड़कर नई उपलब्धि की है लेकिन फिर भी इस परिभाषा को पूर्ण नहीं कहा जा सकता।

5. वुड़वर्थ :-

``मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो व्यक्ति के क्रिया कलापों का अध्ययन वातावरण के संदर्भ में करता है।``[6]

यह मानना ही होगा कि व्यक्ति के जीवन पर उसके निकटतम व्यक्ति और वातावरण का प्रभाव पड़ता है। इस तथ्य को सामने रखकर ही वुडवर्थ ने अपनी परिभाषा में मानव क्रिया-व्यापार का अध्ययन (वातावरण को सामने रखकर) करनेवाले शास्त्र को मनोविज्ञान कहा है। लेकिन मानव मन पर या उसके कार्य-कलापों पर सिर्फ वातावरण का ही प्रभाव नहीं होता अपितु उसे अन्य घटक भी प्रभावित करते हैं। अत: यह परिभाषा भी पूर्ण नहीं है।

6. वैलेंटाइन :-

``मनोविज्ञान मन का वैज्ञानिक अध्ययन करनेवाला विज्ञान है, जिसमें केवल बौद्धिक

तत्वों का ही नहीं भावात्मक अनुभवों, प्रेरक शक्तियों, क्रिया-कलापों एवं व्यवहार का अध्ययन भी सम्मिलित है।``[1]

वैलेंटाइन ने अपनी परिभाषा में बौद्धिक तत्वों के साथ-साथ भावात्मक अनुभवों, प्रेरक शक्तियों , क्रिया-कलापों एवं व्यवहार का समावेश किया है। वैसे तो वैलेंटाइन ने अपनी परिभाषा समस्त मानवी कार्य-व्यापारों का समावेश किया है लेकिन मनोविज्ञान सिर्फ मानवों का ही नहीं तो मानवेत्तर प्राणियों का भी अध्ययन करता है। उपर्युक्त परिभाषाओं की अपेक्षा वैलेंटाइन की परिभाषा सशक्त है इसमें कोई शक नहीं फिर भी इसे पूर्ण रूपेण नहीं कहा जा सकता।

7. जेम्स ड्रेवर :-

``मनोविज्ञान वह विधायक विज्ञान है जो कि मनुष्य और पशु के (आंतरिक विचारों और भावों या ) मानसिक जीवन की अभिव्यक्ति के सूचक व्यवहार का अध्ययन करता है।``[8]

जेम्स ड्रेवर ने अपनी परिभाषा में पशु के आंतरिक विचारों का समावेश कर अपनी परिभाषा को पूर्णता प्रदान करने का प्रयास किया है किंतु उनकी परिभाषा में आंतरिक विचारों का समावेश है। इन आंतरिक विचारों का अध्ययन करने के लिए मनुष्य के निकटतम वातावरण को जानना आवश्यक होता है। इस वातावरण को जानने से पहले हम किसी भी व्यक्ति या पशु या मानसिकता के कार्य-व्यापार को नहीं जान सकते। अत: यह परिभाषा भी पूर्ण नहीं लगती।

8. गणपति चंद्र गुप्त :-

``मनोविज्ञान वह विषय है जिसमें मानसिक पक्ष से संबंधित विभिन्न तथ्यों का अध्ययन वैज्ञानिक पद्धति से प्रस्तुत किया जाता है।``[9]

प्रस्तुत परिभाषा में गणपतिचंद्र जी ने सिर्फ मानसिक पक्ष का विचार किया है। परंतु मनोविज्ञान मानसिक पक्ष का अध्ययन करने के साथ-साथ अन्य बातों का भी अध्ययन करता है अत: यह परिभाषा पूर्ण नहीं है।

9. हिंदी विश्वकोश :-

``शास्त्रविशेष। इसमें चित्त की वृत्तियों का विवेचन होता है।``[10]

प्रस्तुत परिभाषा में मानव के चित्त में होनेवाले असंख्य कार्य-व्यापारों का विचार किया है। परंतु मनुष्य को प्रभावित करनेवाले बाह्य घटकों का विचार नहीं किया, अत: यह परिभाषा भी पूर्ण नहीं है।

10. नालंदा विशाल शब्दसागर :-

``वह शास्त्र जिसमें चित्त की वृत्तियों का या मन में उठनेवाले विचारों की मीमांसा होती है।``[11]

प्रस्तुत परिभाषा में चित्त के कार्य-व्यापारों का और मन में उठनेवाले विचारों का विचार किया है परंतु चित्त और मन को प्रभावित करनेवाले बाह्य कारकों का उल्लेख नहीं अत: यह भी परिभाषा अपूर्ण ही है।

11. `हिंदी शब्दसागर` :-

``वह शास्त्र जिसमें चित्त की वृत्तियों का विवेचन होता है। वह विज्ञान जिसके द्‌वारा यह जाना जाता है कि मनुष्य के चित्त में कौन-सी वृत्ति कब, क्यों और किस प्रकार उत्पन्न होती है। चित्त की वृत्तियों की मीमांसा करनेवाला शास्त्र।``[12]

प्रस्तुत परिभाषा में ऊपर दी गई दोनों परिभाषाओं को ही विस्तृत रूप से दिया है, साथ ही मनुष्य के चित्त में उत्पन्न कार्य-व्यापारों का निर्माण कब, क्यों और किस प्रकार होता है इस बात को जोड़कर पूर्ण रूप देने की कोशिश की है।

मनोविज्ञान वैज्ञानिक प्रगति के कारण युग के साथ-साथ बदलता गया। प्रथम मनोविज्ञान को `दर्शन` की एक शाखा के रूप में पहचाना जाता था। आगे चलकर उसे स्वतंत्र रूप प्राप्त हुआ है। पहले इसे सिर्फ मन का अध्ययन करनेवाला विज्ञान समझा जाता था, लेकिन आगे जैसे-जैसे उसने प्रगति की उसकी परिभाषाएँ बदलती रही। आगे और भी इसमें प्रगति के आसार नजर आते हैं। इसीलिए मनोविज्ञान को कोई भी वैज्ञानिक एक निश्चित परिभाषा में नहीं बांध सका है। और मनोविज्ञान को परिभाषित करना भी सहज, सरल नहीं है, अत: हम कह सकते हैं कि ``मनोविज्ञान वह विज्ञान है जिसमें सभी जीवों के मानसिक पक्षों का उनसे संबंधित वातावरण का अध्ययन कर वैज्ञानिक पद्‌धति से उनके व्यवहार और क्रिया-कलापों का सर्वांगिण अध्ययन करता है।``

मनोविज्ञान का स्वरूप :-

मनोविज्ञान का अध्ययन क्षेत्र आत्मा तक ही सीमित था। अब बदलते युग तथा वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ मनोविज्ञान के अध्ययन-क्षेत्र में वृद्धि हो गई। इससे आत्मा, चेतना, मानव मन, व्यवहार, अनुभव, वातावरण प्रेरक शक्तियों, क्रिया-कलापों का अध्ययन भी किया जाता है। तात्पर्य, मनोविज्ञान के अंतर्गत सभी मानव तथा मानवेत्तर प्राणियों के दैनिक क्रिया-कलापों का अध्ययन किया जाता है। इस बात से मनोविज्ञान का विकास परिचय हमें सहज ही होता है। दर्शन शास्त्र के अंतर्गत रखी जानेवाली इस शाखा को ``जर्मनी के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक वुण्ट ने उन्नीसवीं शताब्दी में मनोविज्ञान को वैज्ञानिक रूप प्रदान करने का प्रशंसनीय कार्य किया।``[13] तब से लेकर मनोविज्ञान एक स्वतंत्र विज्ञान के रूप में अपना विकास करता आया है। आधुनिक युग में इसे स्वतंत्र विषय के रूप में स्थापन किया तथा स्वतंत्र विषय के रूप में मान्यता दी गई है। ``मनोविज्ञान की एक स्वतंत्र विषय के रूप में स्थापना आधुनिक युग की देन है।``[14] आज साहित्य के क्षेत्र में भी मनोविज्ञान ने क्रांति की है। हर भाषा के साहित्य में मनोविज्ञान देखने को मिलता है। विश्व के हर प्रकार के साहित्य की तरह हिंदी की सभी साहित्यिक विधाओं को मनोविज्ञान ने प्रभावित किया है। इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि, ``इसकी बीस से भी अधिक अलग-अलग शाखाएँ हैं जिसमें विभिन्न दृष्टिकोन से न केवल मानव-मन अपितु पशुओं तक के मानसिक क्रिया-कलापों का अध्ययन वैज्ञानिक पद्धति द्वारा किया जा रहा है।``[15]

क. मनोविज्ञान की शाखाएँ :-

मुख्य रूप से मनोविज्ञान की दो शाखाएँ मानी जाती हैं।

(अ) सैद्धांतिक मनोविज्ञान।

(आ) व्यवहारिक मनोविज्ञान।

सैद्धांतिक मनोविज्ञान में विभिन्न प्रयोगों और परीक्षणों के आधार पर, प्रायोगिक निष्कर्षों का आधार लेकर मनोविज्ञान के सिद्धांतों की स्थापना की जाती है।``[16]

व्यवहारिक मनोविज्ञान में स्थापित सिद्धांतों के आधार पर विभिन्न मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों, पद्धतियों तथा समस्याओं का अध्ययन प्रस्तुत किया जाता है।``[17]

बदलती शास्त्रीय मान्यताओं और वैज्ञानिक प्रगति के कारण मनोविज्ञान की इन दो शाखाओं की अनेक शाखाएँ सामने आई जो इस प्रकार हैं-

(अ) सैद्धांतिक मनोविज्ञान की शाखाएँ :-

1. सामान्य मनोविज्ञान।
2. प्रयोगात्मक मनोविज्ञान।
3. पशु-मनोविज्ञान।
4. शारीरिक मनोविज्ञान।
5. बाल मनोविज्ञान।
6. किशोर मनोविज्ञान।
7. समाज मनोविज्ञान।
8. वैयक्तिक मनोविज्ञान।
9. असामान्य मनोविज्ञान।
10. विकासात्मक मनोविज्ञान।
11. लोक मनोविज्ञान।
12. विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान।
13. मनोविश्लेषणात्मक मनोविज्ञान।
14. परामनोविज्ञान।
15. मनोभौतिक विज्ञान।

आदि शाखाओं का समावेश सैद्धांतिक मनोविज्ञान के अंतर्गत किया गया है। इन शाखाओं में मानव के संपूर्ण मानसिक व्यवहार, क्रिया-कलाप, आचार-विचार, वर्तन आदि का अध्ययन किया जाता है। अध्ययन की सुविधा के लिए ही मनोविज्ञान की इन उपशाखाओं को वैज्ञानिकों ने जन्म

दिया है। सैद्धांतिक मनोविज्ञान की तरह व्यवहारिक मनोविज्ञान की भी अनेक शाखाएँ बताई जा सकती हैं जैसे -

(आ) व्यवहारिक मनोविज्ञान की प्रमुख शाखाएँ :-

1. शिक्षा मनोविज्ञान।
2. औद्योगिक मनोविज्ञान।
3. व्यापार मनोविज्ञान।
4. सैन्य मनोविज्ञान।
5. चिकित्सा मनोविज्ञान। आदि।

शिक्षा-मनोविज्ञान में शिक्षा संबंधी प्रयोगों का निरीक्षण-परीक्षण किया जाता है। औद्योगिकरण के संबंध में औद्योगिक मनोविज्ञान जानकारी रखता है। इसी प्रकार व्यापार, सैन्य व चिकित्सा आदि के बारे में विस्तृत जानकारी उन्हीं से संबंधित मनोविज्ञान की शाखाओं से प्राप्त होती है।

मनोविज्ञान को पहले 'दर्शन' शास्त्र का ही एक भाग समझा जाता था लेकिन 19 वीं शताब्दि में जर्मन विचारवंत 'उंट' ने मनोविज्ञान को सर्वप्रथम वैज्ञानिक रूप प्रदान करने का महत्, उल्लेखनीय कार्य किया। इसका विकास आधुनिक युग में फ्रायड, एडलर व जुंग ने किया है। मनोविज्ञान का स्वरूप जानने के लिए इन वैज्ञानिकें के द्वारा प्रतिपादित मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का परिचय अत्यंत आवश्यक है। मनोविज्ञान के विभिन्न संप्रदायों में से प्रमुख संप्रदाय इस प्रकार है -

ख. मनोविज्ञान : विभिन्न संप्रदाय :-

1. मनोविश्लेषणवादी संप्रदाय।
2. गेस्टाल्टवादी संप्रदाय।
3. व्यवहारवादी संप्रदाय।
4. प्रवृत्तिवादी संप्रदाय।

5. वातावरणवादी संप्रदाय।

1. मनोविश्लेषणवादी संप्रदाय :-

मनोविश्लेषणवादी संप्रदाय के प्रमुख प्रवर्तक `फ्रायड` को माना जाता है। मनोविश्लेषणवाद फ्रायड का अत्यंत नवीन सिद्धांत है। फ्रायड के पहले इस सिद्धांत पर किसी ने भी विचार नहीं किया था। इसी सिद्धांत के कारण फ्रायड को मनोविज्ञान का ज्ञाता होने का गौरव प्राप्त है। ``फ्रायड ने मन की विभिन्न दशाओं का गहन अध्ययन किया था। इस गहन अध्ययन के आधार पर उसने मन को तीन भागों में विभाजित किया - अचेतन, अवचेतन तथा चेतन।``[18] मनोविश्लेषण के अंदर अचेतन मन का संबंध स्मृति से है। हम किसी पुरानी अथवा भूली हुई व्यक्ति को या वस्तु को स्मरण में लाने की कोशिश करते हैं तो अचेतन मन के कारण वह व्यक्ति या वस्तु जल्दी ही हमारे स्मृतिपटल पर आ जाती है। याने अचेतन के कारण हममें स्मृति का कार्य होता है। मनोविश्लेषणवादियों के प्रमुख सिद्धांतो में `अचेतन` का सिद्धांत है। इसके साथ ही उन्होंने और मान्यताएँ दी हैं- उनके प्रमुख सिद्धांत हैं -

क. वृत्ति सिद्धांत -

ख. अचेतन सिद्धांत -

ग. काम सिद्धांत -

घ. मनोग्रंथियाँ -

ङ. इदम,अहम तथा नैतिक मन -

च. स्वप्न सिद्धांत -

क. वृत्ति सिद्धांत :-

इस सिद्धांत को ``प्रवृत्तियों के ध्रुवीकरण का सिद्धांत`` भी कहा जाता है। फ्रायड ने इस सिद्धांत के द्वारा प्रतिपादित किया है कि व्यक्ति में दो प्रकार की प्रवृत्तियाँ होती हैं - एक काम-वृत्ति तथा मृत्यु-वृत्ति। उसे ही फ्रायड ने प्रमुखता दी है। काम वृत्ति से फ्रायड का तात्पर्य है - ``यह वृत्ति ही व्यक्ति के समस्त व्यवहारों को प्रेरित करती है। इसमें सभी प्रकार की प्रेम तथा काम प्रवृत्तियाँ निहित होती हैं।``[19]

मृत्यु-वृत्ति याने मुनष्य अपना जीवन विनाश अपने ही हाथों करता है। इससे यह ज्ञात होता है कि मानव इन क्रियाओं की ओर बढ़ता है। और इन क्रियाओं को करता है जो उसे पतन की ओर ले जाती हैं। इन क्रियाओं के कारण मानव प्राणी का कभी भी भला नहीं होता परंतु ये क्रियाएँ समस्त प्राणियों में विद्यमान हैं। फ्रायड के अनुसार मृत्यु वृत्ति का अर्थ है - ``मृत्यु-वृत्ति का अर्थ व्यक्ति की उन समस्त प्रवृत्तियों से है जिनके द्‌वारा वह स्वयं का हनन करता है।``[20] अर्थात इस प्रवृत्ति सिद्‌धांत के द्‌वारा फ्रायड़ ने मानवी मस्तिष्क तथा मन के असंख्य कार्य-व्यापारों का लेखा-जोखा इस सिद्‌धांत में दिया है।

ख. अचेतन सिद्‌धांत :-

मनोविश्लेषण वादियों की अर्थात फ्रायड़ की सबसे बड़ी खोज अचेतन सिद्‌धांत है। इससे पूर्व मनोविज्ञान को चेतन का सिद्‌धांत माना जाता था। फ्रायड ने पहली बार इस सिद्‌धांत की स्थापना की, उनके अनुसार - ``अचेतन मन का गुप्ततम भाग है। व्यक्ति के समस्त आचरण इसके द्‌वारा ही प्रेरित होते हैं। मानव जीवन की समस्त स्मृतियाँ तथा अनुभूतियाँ आचेतन मन में छिपी रहती हैं जिनका उसे अभास भी नहीं होता।``[21] तात्पर्य मानव के अचेतन मन में द्‌वेष, प्रेम, मत्सर, काम आदि क्रियाएँ होती हैं परंतु मनुष्य इससे अनभिज्ञ होता है। वे योग्य समय में प्रकट होती हैं।फ्रायड ने मन को तीन वर्गों में विभाजित किया है। जैसे- i) चेतन ii) अचेतन iii) अवचेतन। मनुष्य का अचेतन मन काममूलक होता है। यह चेतन में अपनी अभिव्यक्ति चाहता है। किंतु चेतन और अचेतन के बीच अवचेतन एक समीक्षक का काम करता है जो चेतना तक पहुँचनेवाली अनुचित मानसिक उत्तेजनाओं को अस्वीकार करता है। इसके द्‌वारा लौटाई हुई, भावनाएँ दमित होकर अचेतन में चली जाती हैं। वहाँ से अपना रूख बदलकर चेतना में प्रवेश करने का प्रयत्न करती हैं।

ग. कामसिद्‌धांत :-

फ्रायड काम सिद्‌धांत को अत्यंत व्यापक अर्थ में लेते हैं। प्रत्येक मानव प्राणी व मानवेत्तर प्राणी के अंदर कामवासना होती है। मानव छोटा हो या बड़ा उसके अंदर काम-भावना का वास नितांत होता है। वयस्क व युवक में काम-वासना होती ही है परंतु फ्रायड का मत है कि - ``बालक में जन्म के साथ ही काम-भावना का उदय हो जाता है।``[22] तात्पर्य, काम-भावना जन्म से ही मनुष्य के अंदर विद्यमान होती है।

घ. मनोग्रंथियाँ :-

काम-भावना संबंधी फ्रायड के क्रांतिकारी और मौलिक सिद्धांत ने अब तक प्रचलित धारणाओं को नई दिशा दी है। फ्रायड़ पहले दार्शनिक है जिन्होंने यह माना कि बालकों में जन्म से ही काम-भावना होती है। दो साल की उम्र से ही बच्चों की कामभावना माता-पिता की ओर केंद्रित होती है। बालक और बालिका अपने भिन्न लिंगी व्यक्ति की ओर आकर्षित होते हैं। जैसे बालक माता के प्रति आकर्षित होता है और बालिका पिता के प्रति। फ्रायड के अनुसार - ``इस व्यवस्था में शिशु अपनी जननेंदियों द्वारा आत्मसुख में `इदीपस ग्रंथी` का विकास होता है। फ्रायड की मान्यता है कि शिशु की लैंगिकता की इच्छा उसके शैशव-काल में चरमावस्था प्राप्त करती है।फ्रायड के अनुसार - ``इस अवस्था में बालक माता के प्रति तथा बालिका पिता के प्रति आकृष्ट होती है।``[24] तात्पर्य यह कि काम-भावना नैसर्गिक क्रिया है, जो जन्म से ही मनुष्य प्राणी में विद्यमान होती है।

ङ. इदम् (इद),अहम् (इगो) तथा नैतिक मन (सुपर इगो) :-

फ्रायड ने मस्तिष्क के तीन भाग माने हैं, उन्हें ही इदम् , अहम् , नैतिक मन के रूप में जाना जाता है। व्यक्तित्व की यह तीनों सस्थाएँ मूल शक्ति के स्त्रोत `काम-भावना` से ही विकसित यथार्थ के संस्कारों में अनुकूलित सामाजिक एवं नैतिक मानदंडों द्वारा क्रियान्वित होकर कार्यरत है।

1. इदम् (इड) :-

इदम् आदिम मानव की मौलिक वस्तु है। मन का यह भाग अचेतन होता है। समस्त आदिम प्रवृत्तियाँ कुंठाएँ तथा वंशगत व जातिगत गुण भी इसी में रहते हैं इसका उद्देश्य मानव की प्रवृत्त वासनाओं को संतुष्ट करना होता है। यह नीति या अनीति नहीं जानता और न ही भले-बुरे आचरण की जानकारी रखता है। यह दबी-दबाई इच्छा और वासनाओं का भंडार है। जैसे - ``व्यक्ति की दमित इच्छाओं और वासनाओं का आधार इदम् ही है। इसका संबंध व्यक्ति की काम-शक्ति से है।``[25] इसमें किसी प्रकार की क्रमबद्धता या व्यवस्था नहीं होती। यह तो कामशक्ति का भंडार है। इदम् प्राणी के व्यक्तित्व का वह अंग है, जो सभी प्राणियों की अविभाज्य शक्ति का स्त्रोत है।

2. अहम् :-

मानव के व्यक्तित्च में अहम् एक ऐसी संस्था है, जो बुद्धि और तर्क पर आधारित है।

अहम्,इदम् मनुष्य की पशु प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने का कार्य करता है। समाजबाह्य तथा असामाजिक कृति तथा विचारों का अहम् दमन करता है। जैसे ---जो विचार कार्य एवं इच्छाएँ समाज विरोधी हैं, समाज के आदर्शों के प्रतिकूल हैं, जिन्हें समाज में भय से जो नैतिक मन के भय से हमारा चेतन मन या अहम् स्वीकार नहीं करता वह दमन करता है।``[26] तात्पर्य, समाज विरोधी वर्तन और प्रवृत्ति को जन्म देनेवाले विचार को अहम् दबा देता है। उनका दमन करता है।

3. नैतिक मन (सुपर इगो) :-

एक स्वतंत्र मानसिक शक्ति के रूप में यह `इगो` का विशिष्ट विकास है। यह व्यक्ति के प्रति माता-पिता, परिवार और समाज का प्रतिनिधित्व करता है। मन का यह भाग अंतरात्मा का पर्याय समझा जाता है। अपने विधिनिषेधों का उल्लंघन करनेवाली प्रवृत्तियों का दमन करनेवाली प्रवृत्तियों का दमन करने के लिए यह `इगो` पर दबाव ड़ालता है।

इस प्रकार इदम् , अहम् तथा नैतिक मन क्रमश: शारीरिक, भौतिक और सांस्कृतिक रूप के अनुकूल होते हैं। व्यक्ति के मानसिक व्यापार का मूल्यांकन इनके कारण सुलभ हो जाता है।

च. स्वप्न-सिद्धांत :-

स्वप्न के संबंध में फ्रायड ने प्रथम अपने विचार प्रकट किए हैं। स्वप्न मनुष्य की दमित वासना और अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति करते हैं। व्यक्ति किसी बात को समाज के डर से अपने अंदर दबाए रखता है, उसी क्रिया को वह स्वप्न में क्रियान्वित करता है और आत्मसंतुष्टि प्राप्त करता है। व्यक्ति जागृतावस्था में जो कार्य समाज के डर तथा अन्य किसी कारणों से नहीं कर सकता वह कार्य व्यक्ति स्वप्नों के द्वारा पूर्ण करता है। फ्रायड़ के अनुसार - ``व्यक्ति अपनी कामेच्छा को संतुष्ट करना चाहता है, परंतु सामाजिक तथा नैतिक कारणवश इन इच्छाओं को तृप्त करने में असमर्थ रहता है, अत: वह अपनी कामभावनाओं की पूर्ति परिवर्तित रूप में अथवा स्वप्न के द्वारा कर लेता है।``[27] तात्पर्य, जो कार्य व्यक्ति प्रत्यक्ष रूप में करने में असमर्थ होता है, समाज तथा परिवार के डर से इस कार्य को अंजाम नहीं दे सकता बल्कि अपनी इच्छा के विरुद्ध उसका दमन करता है। वही अतृप्त इच्छा स्वप्न के द्वारा मनुष्य पूर्ण करने का प्रयास करता है।

उपर्युक्त विवेचन` हिंदी भाषा एवं साहित्य विश्वकोश` व `आधुनिक मनोविज्ञान और सूर काव्य` इन किताबों का आधार लेकर किया गया है।

मनोविज्ञान का उदय उन्नीसवी शताब्दि में भले ही हुआ है, परंतु इस विज्ञान का विकास मनोविश्लेषणवादी वैज्ञानिक फ्रायड़, एड़लर तथा युंग ने ही किया है। इन दार्शनिकों ने अपने मौलिक विचार गहरे अध्ययन के साथ विश्व के सामने रखे और इसी कारण मनोविज्ञान का अध्ययन इन तीन मनोवैज्ञानिकों को सामने रखकर ही किया जाता है।

उपर्युक्त विवेचन के तथ्य को समझते इस लघुशोष-प्रबंध के कार्य के इस अध्याय के लिए इन वैज्ञानिकों को ही सामने रखा है। `सारिका` पत्रिका में चित्रित कहानियों में नारी का मनोवैज्ञानिक अध्ययन इन्हीं मनोवैज्ञानिकों के सिद्धातों के आधार पर करने की कोशिश की है।

आलोच्य कहानियों में चित्रित नारी का मनोविज्ञान :-

मनोवैज्ञानिक कहानी `मानव की मानसिक उथलपुथल तथा उसके आंतरिक व्यक्तित्व को प्रस्तुत करती है। मनुष्य के व्यवहार, उसके इर्द-गिर्द के वातावरण का उसके व्यक्तित्व पर पड़ा प्रभाव आदि सूक्ष्म बातों का विवेचन मनोवैज्ञानिक कहानियों में होता है। हेतु भारद्वाज के अनुसार `` मनोवैज्ञानिक कहानी व्यक्ति के अचेतन मन की गुत्थियों को व्यक्त करती है। इन गुत्थियों में मानव की अतृप्त इच्छाएँ, दमित वासनाएँ, विकृतियाँ, कुंठाएँ, अनुभूतियाँ आ जाती हैं और मनोवैज्ञानिक कहानी इन सभी मानसि ग्रंथियों को रूपायित करती है।``[28] तात्पर्य, मनोवैज्ञानिक कहानियाँ मानसिकता के धरातल पर मनुष्य के आंतरिक कार्य-व्यापारों का प्रस्फुटन करती हैं।

क. बालिकाओं का मनोविज्ञान :-

आधुनिक मनोविज्ञान ने बालकों के स्वतंत्र अस्तित्व को भी महत्व दिया है। बालकों के क्रिया-कलापों का अध्ययन करना बालमनोविज्ञान का विषय है। बालकों के व्यक्तित्व के विकास के लिए उनकी मानसिकता का अध्ययन करना नितांत आवश्यक है। क्रिया कलापों का अध्ययन उनके घर तथा निकटतम व्यक्ति व वातावरण को सामने रखकर किया जाता है। बाल्यावस्था में बालकों पर उनके घर का वातावरण तथा माता-पिता, दादा-दादी आदि क प्रभाव पड़ता है। उनका व्यक्तित्व विकास में इन चरित्रों

का बहुत बड़ा हाथ होता है। इसी बात को सामने रखकर आज साहित्य में भी बाल मनोविज्ञान सक्रिय रहा है, अत: कहानियों में भी बाल मनोविज्ञान पाया जाता है।

परिवार की बड़ी औरतों का बच्चियाँ अनुकरण करती हैं। बड़ी औरतों की तरह शर्माना, बड़ों के सामने नजरे झुकाना इन बातों को वह सहज ही सीख लेती हैं। जसबीर चावला की कहानी `फ्रॉक का रंग` की कल्पना निर्धनता के कारण तथा मां बीमार पड़ने के कारण अपना व अपनी दो छोटी बहनों का पेट भरने के लिए वेश्यावृत्ति करने लगती है। जब कथा नायक के द्वारा फ्रॉक फाड दिया जाता है तब वह अपने फ्रॉक के दो फटे हुए भागों को अपने हाथों से जोड़ने का असफल प्रयास करती है। अपनी नंगी कमर ढकने में वह इतनी मग्न है कि पास ही ग्राहक उसके साथ बात करता है परंतु उसकी तरफ उसका ध्यान ही नहीं है। जैसे - ``वह मुझे नहीं सुन रही थी। उसकी उंगलियाँ फ्रॉक के फटे हुए हिस्से में उलझी थी। वह फटे हुए दोनो हिस्सों को सटा रही थी जहाँ उसकी कमर नंगी हो रही थी।``[29] तात्पर्य यह कि गरीबी की हालत में, पेट भरने की खातिर वेश्यावृत्ति करने के लिए प्रवृत्त इस लडकी का फ्रॉक फट जाने पर उसकी मानसिक आवस्था कैसी होती है, इसी बात को लेखक ने परिचित कराया है। शर्म और लज्जा के कारण अपनी नंगी कमर को ढकने का असफल प्रयास करती यह लडकी ग्राहक से ही कहती है, ``मुझे फ्रॉक ला दोगे? ``[30] आगे लेखक ने इस लडकी की मानसिक दशा का वर्णन करते हुए कहा है - ``लड़की रूपयों को अंडरपेंट में खोंस कर उकडू बैठ गयी।``[31] तात्पर्य यह कि अपना जिस्म बेचकर भी सिर्फ दो रूपये पानेवाली इस लड़की की मानसिक हालत बहुत ही बिगड जाती है अत: वह उदास-सी रास्ते पर दूसरे ग्राहक के इंतजार में बैठ जाती है।

हिंदी के जाने-माने कहानीकार यशपाल की कहानी `फूलों का कुर्ता` की फूलो सिर्फ पांच साल की है और उसकी शादी पडोसी गांव के सात वर्षीय संतू से होती है। दोनों बच्चे हैं। जब फूलो अन्य लडकों के साथ खेलती है और उसका पति खेल में आता है तो लड़के फूलो का मजाक उडाते हैं। फूलो शरमा जाती है। ``उसने अपनी माँ को, गांव की सभी भली स्त्रियों को लज्जा से घूंघट और पर्दा करते देखा था। उसके संस्कारों ने उसे समझा दिया था, लज्जा से मुँह ढंक लेना उचित है।``[32] तात्पर्य यह कि अपनी शर्म को छुपाने के लिए फूलो अपनी मां तथा गांव की अन्य स्त्रियों का अनुकरण करती है। इससे स्पष्ट है कि बच्चे अनुकरण प्रिय होते हैं। इससे मनोवैज्ञानिक जुंग के अनुकरण सिद्धांत का परिचय मिलता है। जुंग के अनुसार - ``अपनी जाति, धर्म तथा संस्कृति संबंधित गुण प्रत्येक व्यक्ति में विद्यमान

होते हैं और ये गुण व्यक्ति को वंश-परंपरा से प्राप्त होते हैं।``[33] फूलो का शर्म के कारण अपने कुर्ते से मुँह छिपाना जुंग के `अनुकरण` सिद्धांत पर प्रकाश डालता है।

बचपन में देखी किसी असाधरण बात से बच्चे प्रभावित होते हैं। वे बातें उनके दिमाग में इस कदर बैठ जाती हैं कि उन परिस्थितियों की याद आते ही वे बातें अपने-आप उनको स्मरण होती हैं। इस्मत चुगताई ने अपनी कहानी `लिहाफ` द्वारा इसी बात पर प्रकाश डाला है। बचपन में दो महिलाओं को हाथी जैसे लिहाफ में झूमते देखकर कथा नायिका के मन में जिज्ञासा, डर पैदा होता है। यह बात उसके दिमाग में इस कदर बैठ गई है कि उस लिहाफ का हिलना-डूलना वह कभी नहीं भूलती। जैसे- ``जाडों में जब मैं लिहाफ ओढती हूँ सामने की दीवार पर उसकी परछाई मुझे हाथी की तरह झूमती हुई मालूम होती है। तब मेरा दिमाग सहसा गुजरे जमाने के पर्दों में दौड़ने -भागने लगता है। न जाने क्या-क्या याद आने लगता है।``[34] तात्पर्य यह कि कथा नायिका बचपन में दो औरतों को लिहाफ में हिलते-डुलते देखती है। नासमझ होने के कारण तब लिहाफ के हिलने का मतलब नहीं जानती थी, अत: उसके हिलने के कारण उसके मन में डर पैदा होता है। वह बात जवानी तक उसको स्मरण रहती है। आगे वह कहती है - ``अम्मा की यह मुंहबोली बहन, वही बेगमजान थी, जिनका लिहाफ मेरे दिमाग में गर्म लोहे के दाग की तरह सुरक्षित है।``[35] तात्पर्य यह कि बचपन में देखी किसी असाधारण घटना को बच्चे सहजता से नहीं भूलते।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बच्चे अनुकरण प्रिय होते हैं। संस्कृति तथा वातावरण का उनके व्यक्तित्व पर प्रभाव पडता है। लडकियाँ अपनी माँ का अनुकरण करती हैं। माँ की तरह शर्माना वह अनुकरण से ही सीखती हैं। इसी प्रकार किसी असाधारण घटना का उनके मन पर इतना प्रभाव पड़ता है कि उस घटना को वे अपनी स्मृति से कभी भी निकाल नहीं सकते।

ख. युवतियों का मनोविज्ञान :-

बालिकाओं का मनोवैज्ञानिक चित्रण करने के साथ-साथ आलोच्य कहानियों में से कुछ कहानियों में युवती नारी का भी मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। युवावस्था को प्राप्त करने वाली युवतियों का मनोवैज्ञानिक चित्रण करते समय उसकी सेक्स विषय में जिज्ञासा, अज्ञान, युवकों के प्रति आकर्षण, उनके प्रति घृणा, व क्रोध का चित्रण मिलता है।

युवती जब किसी से प्रेमी करती है तो वह पूर्ण रूप से उसके प्रति समर्पित होती है। किसी धन या चीज की कामना किए बिना अपना सबकुछ उसे सौंप देती है। परंतु पुरूष अपनी वासना शांत होने के बाद औरत को कोई महत्व नहीं देता। वह हर औरत को काम-वासना शांत करने का एक साधन मात्र समझता है। इस बात का असर युवती के दिमाग पर होता है। वह क्रोध और विवशता से तड़फ उठती है। उसकी दिमागी हालत बिगड़ जाती है। मंटो की कहानी `नरगिस` की नायिका नरगिस एक लड़के द्वारा खराब होने पर तथा उसके शरीर का दस रूपये मूल्य आंकने पर अपना मानसिक संतुलन खो बैठती है। जैसे - ``श्रीनगर के अस्पताल में जब किसी लडके ने उसे खराब किया तो जाते-जाते दस रूपये देने लगा। नरगिस को बहुत घुस्सा आया उसने नोट फाड़ दिया। इस घटना का उसके दिमाग पर यह असर पड़ा कि उसने बाकायदा धंदा शुरू किया।``[36] तात्पर्य यह कि नरगिस भावावेश में उस लड़के के प्रति समर्पित होती है, परंतु लड़का उसे वेश्या समझकर उसके शरीर का मूल्य चुकाता है, अत: नर्गिस के संवेदनशील दिल को ठेंस पहुँचती है और वह अपने पिता के घर से भाग जाती है। बाद में वह वेश्या बन जाती है।

हरमन चौहान की कहानी `छाग` की नायिका गलकू गोठिया से प्यार करती है। गोठिया उसे एक भोग-वस्तु समझता है और उसके शरीर के साथ खेलता है। गलकू के लाख समझाने पर भी वह शादी करने के लिए तैयार नहीं होता। इस बात से तंग आकर गलकू प्रतिशोध की भावना से जलने लगती है। क्रोधावेश के कारण वह गोठिया का पुरूषत्व काट डालती है। जैसे - ``वह खूब नशे में धुत होकर मेरे ऊपर हावी होने लगा तो मैंने उसकी मर्दानगी को ऐसी सजा दी कि बाद में उसने जरूर खुदकुशी कर ली होगी।``[37] तात्पर्य यह कि युवती जब किसी पुरूष से सच्चा प्रेम करती है, अपना सबकुछ उस पर न्यौछावर करती है तो वह चाहती है कि पुरूष भी उसे उतना ही चाहे। उससे प्यार करे। जब ऐसा नहीं होता तो उसके दिमाग में बदले की भावना जन्म लेती है और वह अपना अहित करनेवाले पुरूष को गलकू की तरह सजा देती है। गलकू की इस करतूत के कारण गोठिया आत्महत्या करता है। परंतु गांववाले उसे हत्या समझते हैं और उस हत्या के इल्जाम में गलकू को फंसा देते हैं। समाज के वही प्रतिष्ठित लोग गलकू के विरूद्ध गवाही देते हैं, जो कभी गलकू की मां की इज्जत के साथ खेलते थे। इस बात से गलकू इतनी प्रभावित होती है कि उसे सभी मर्द एक जैसे नजर आते हैं, स्वार्थी, लालची, हावस के पुजारी। जैसे ``आपको सज़ा देनी है तो आप दे दो ! आखिर आप भी तो मरद हैं और मुझे दुनियाँ के तमाम मरदों से

नफरत है।``[38] तात्पर्य यह कि किसी युवती को चंद पुरूषों के द्वारा पीडित किया जाता है, तो उसे दुनियाँ के तमाम पुरूष एक जैसे ही नजर आते हैं।

भारतीय संस्कृति में बच्चे अपने सहपाठी, मित्र आदि के द्वारा लैंगिक विषय के संबंध में जानकारी प्राप्त करते हैं। यही जानकारी लड़कियों को इस विषय का ज्ञान रखनेवाली सहेली अथवा माँ से प्राप्त होती है। परंतु जो लड़कियाँ औरतों से अलग रहती हैं, जिनकी कोई सहेली नहीं है, ऐसी लडकियाँ इस विषय में अज्ञानी ही रहती हैं। इस अज्ञान के कारण उनके सामने अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं। प्रसिद्ध साहित्यिक यशपाल की कहानी `धर्मरक्षा` की ज्ञानवती पिता के साथ ब्रह्मचर्याश्रम में रहती है। उसे सेक्स के विषय में तथा स्त्री-पुरूष के लैंगिक संबंधों में कोई जानकारी नहीं है। गय्या के रंभाने का कारण जानकर मोतीराम गय्या को सांड के पास ले जाने के लिए ज्ञानवती के पास एक रूपय्या मांगता है। ज्ञानवती की उत्सुकता जागृत होती है, वह नहीं जानती कि गय्या को सांड के पास क्यों ले जाया जाता है। वह मोतीराम से पूछती है, तो मोतीराम बताता है - ``अरे जैसे मर्द-औरत करते हैं।``[39] ज्ञानवती का कौतूहल और भी अधिक जागृत होता है। वह पूछती है ``कैसे, क्या क्या करते हैं।``[40] ज्ञानवती की दशा का या अज्ञान का लाभ उठाकर मोतीराम अश्लिलता पर उतर आता है। औरत और मर्द के बीच होनेवाले संबंधों की जानकारी देता है। मोतीराम के समझाने पर ज्ञानवती थोड़ा बहुत समझती है और कहती है - ``हट, गैया तो बड़ी सुशील और पवित्र होती है यह तो बड़ी बुरी बात है।``[41] तात्पर्य यह कि जिस विषय की जानकारी नहीं होती उसके संदर्भ में युवतियों के मन में ही नहीं तो हर आदमी के मन में उत्सुकता निर्माण होती है। इसी उत्सुकता के कारण ज्ञानवती स्त्री-पुरूष संबंध को जानने के लिए लालाइत है। उसको इस मानसिक अवस्था का लाभ उठाकर मोतीराम उसका शरीर भोगता है।

प्रभावी व आकर्षक व्यक्तित्व की युवतियों के पीछे असंख्य युवक प्रेम की भीख मांगते हुए घुमते हैं। इसके विपरित बदसूरत युवतियों की तरफ कोई देखना भी पसंद नहीं करते। भले ही इन लडकियों के बदसूरत होने के कारण इनसे कोई प्यार नहीं करता, परंतु इन लडकियों के मन में भी युवकों के प्रति आकर्षण होता है। चाहत होती है। ये भी किसी के प्यार के लिए तरसती है। रामदरश मिश्र की कहानी `हद से हद तक` की नायिका का बदसूरत है। बदसूरत होने के कारण कोई भी उसकी तरफ नहीं देखता। इस कारण उसके दिल में एक कसक-सी निर्माण होती। उसकी इस अवस्था का वर्णन करते हुए लेखक ने लिखा है - ``लेकिन वह सुंदर जवान लड़कों को सामने से जाते देखती तो उसके भीतर तूफान

उठ खड़ा होता। इच्छा होती उसे बुलाये और छाती में दबाकर तोड़ दे।``[42] तात्पर्य यह कि जवानी की आग में जलती यह युवती किसी युवक का सामिप्य पाने के लिए लालाइत है। परंतु उसकी कुरूपता, बदसूरती के कारण लोग उसकी तरफ देखकर नफरत से थुंकते हैं। जैसे - ``शायद उसके चेहरे पर एक मुस्कान खिंची होती, लेकिन जब कोई उसे यों हसते देखता तो घबराकर आगे बढ़ जाता या नफरत से थूक देता।``[43] इसी प्रकार लोगों की नफरत तथा पिता और बड़ी बहन की मार और अपनी जवानी के कारण परेशान हुई यह युवती तंग आकर निम्न जाति के आदमी के साथ भाग जाती है।

निर्धन माता-पिता अपनी लड़कियों की शादी उचित वर और ठीक समय पर नहीं कर सकते। निर्धन पिता अपनी आर्थिक विपन्नता को दूर करने के लिए अपनी बेटियों की इच्छा के विरुद्ध उनसे काम करवाता है। ऐसे बलपूर्वक काम करवाने के कारण बेटियाँ बाप से घृणा करने लगती हैं। इसी कहानी की नायिका अपने पिता के अत्याचार से पीड़ित होती है। और उसी कारण पिता से घृणा भी करती है। उसके पिता जवान लड़की की शादी कराने के बदले आर्थिक दृष्टि से ऊँचा उठने के लिए उससे दिन-रात काम करवाता है। कथा नायिका के इन्कार करने पर उसे जानवर की तरह पीटता है। इस कारण घृणित होकर नायिका कहती है - ``साला बाप है कि कसाई ---- लडकियों के बलबूते पर अमीर बनने का सपना देखता है।``[44] तात्पर्य यह कि नायिका अपने पिता से इतनी नफरत करती है कि गालियाँ भी देती है। घर से भाग जाने के बाद भी उसे अपनी मां के प्रति लगाव तथा प्रेम है क्योंकि मां भी उसकी तरह ही अपने पति से पिटती रहती है। जब वह अपनी मां से मिलने जाती है तो उसके पिता उसे भला-बुरा कहते हैं, गालियाँ देते हैं। अपने पिता के प्रति कोई भी आदर की भावना मन में न रखनेवाली कथानायिका पिता को ही दम भरती है। जैसे - ``खबरदार, मुझे गाली मत दो, मैं तुम्हारी कोई लगती नहीं हूँ और यह तुम्हारा घर नहीं है, सडक है। इस पर आगे जाने से तुम्हारे फरिश्ते भी नहीं रोक सकते।``[45] इसके साथ ही बाप को जलिल करने के लिए उसके सामने ही सिगरेट पीती है। तात्पर्य यह कि माता-पिता के द्वारा पीडित होने के कारण लडकियाँ अपने ही माता-पिता से नफरत व घृणा करने लगती हैं। इसके विपरित कुछ पढ़ी-लिखी युवतियाँ अपने माता-पिता की निर्धनता के कारण घर की बिगडी हालत सुधारने के उद्देश्य से आजीवन शादी न करने का निर्णय लेती हैं। और नौकरी करके पिता का हाथ बंटाती है। रमेश आनंद की कहानी `नियंत्रण` की आदर्श पिता के निर्धन होने के कारण शादी न कर पिता का हाथ बटाने का निर्णय लेती है।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि युवतियों के अंदर स्थित काम, क्रोध, घृणा, लज्जा आदि आंतरिक भावों का चित्रण करने में कहानी लेखकों को सफलता प्राप्त हुई है।

ग. विवाहित नारी का मनोविज्ञान :-

वर्तमान युग में शिक्षा-क्षेत्र को लेकर भले ही नारी ने अपनी प्रगति की है, परंतु पुरूष प्रधान भारतीय समाज में आज भी उसे पर्याप्त स्वाधीनता प्राप्त नहीं हुई है। उसे हमेशा दूसरों के आधीन व आश्रय में रहना पड़ता है। बचपन में माता-पिता व बड़े भाई के आश्रय में, शादी के बाद सास-ससूर और पति के आश्रय व अधिकार में, बढ़ापे में बेटे के आश्रय में उसे अपना जीवन बिताना पड़ता है। उसे अपना खुद का अस्तित्व ही नहीं होता। पिता के घर में थोड़ी बहुत आजादी तो मिलती है, परंतु पति के घर में उसे देवी समझकर अनेक बंधनों से जकड़ दिया जाता है। घर का हर छोटा-बड़ा व्यक्ति उस पर अधिकार जताता है। परिवार के प्रत्येक सदस्य से पीड़ित नारी अपने पति के सुख में सुख और दु:ख में दु:ख मानती जीवन बिताती है। पति का प्यार और सहारा हो तो वह हर दु:ख को झेलती है। परंतु - ``यदि कोई नारी पति द्वारा पीड़ित और उपेक्षित है तो उसे परिवार और समाज में अत्यंत तुच्छ दृष्टि से देखा जाता है।``[46] तात्पर्य पति को छोड़ परिवार के सभी सदस्यों ने अत्याचार किए भी तो नारी अपने प्रिय पति के प्यार में सबकुछ सह लेती है परंतु अगर पति द्वारा ही वह पीड़ित होती है तो परिवार ही नहीं बल्कि समाज भी उसे पीड़ित करता है। ऐसी दशा में असहाय नारी अपने नारी होने को कोसती है। उसकी मानसिक अवस्था अत्यंत विचित्र होती है। मानसिक यातनाओं को सहते-सहते नारी सुख की आशा लिए जीती रहती है। कई बार तो वह अपनी इस असहाय मानसिक यातनाओं से छुटकारा पाने के लिए अपने-आप को मिटा भी देती है। आलोच्य पत्रिकाओं में गृहिणी नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण प्रस्तुत करनेवाली कुछ कहानियाँ हैं, जिनमें अलग-अलग ढंग से नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया गया है-

1. गृहिणी नारी का मनोविज्ञान :-

गृहिणी नारी को यहाँ इस अर्थ में लिया गया है, जो नारी घरेलू काम-काज देखते-देखते अपने पूरे परिवार का खर्चा चलाती है। पति द्वारा प्राप्त धनराशि में परिवार का खर्चा चलाती है। कई बार तो नारी को अपने परिवार की आर्थिक विपन्नता दूर करने के लिए नौकरी करनी पड़ती है या दूसरों के यहाँ घरेलू कामकाज करना पड़ता है। ऐसी नारी के पति या तो व्यसनी होते है या फिर ये औरते परित्यक्ता या विधवा होती है। अपने परिवार की जिम्मेदारी को पति के बाद इन्हें ही संभालना पड़ता

है। श्याम निर्मम की कहानी `सांप सीढ़ी` की परबतिया पति के शराबी और नक्कारा होने के कारण परिवार की सभी जिम्मेदारियाँ खुद अपने ऊपर लेती है। परिवार की उन्नति के लिए जी तोड मेहनत करती है। इतनी मेहनत करने के बावजूद परबतिया का पति उसकी सराहना करने की अपेक्षा उसे शराब पीकर गालियाँ देता है। पति का शराब पीना उसे अच्छा नहीं लगता फिर भी वह सोचती है - ``सगले दिन घूम-घूम कै दान मांगो। पैर बी थक जावें। फेर सराफ पी बी ली तो कै गजब हो गया।``[47] तात्पर्य यह कि पति शराबी होने पर भी परबतिया उसके शराब पीने का समर्थन करती है।

परबतिया को हर वक्त अपने घर की चिंता सताती रहती है। उसका सबसे बड़ा बेटा लखन अपनी पत्नी के साथ अलग रहने लगा था। परबतिया उस पर रोष करती है फिर भी अपने पोते का मुँह देखने के लिए लालाईत है। जब भी वह घर की हालत को संवरने की कोशिश करती है उलटी बिघड ही जाती है। अपने और परिवार की हालत के बारे में वह सोचती है - ``मरी म्हारी ती जिनगी ई सांप-सिड्डी का तमासा हो री हैगी ! जरा कुछ सिम्हलने की सी होवे कै फौरन ई सांप फन दे मारै हैगा !``[48] तात्पर्य यह कि जब भी परबतिया अपने परिवार को संपन्न बनाने की कोशिश करती है, सांप सीढ़ी के खेल की तरह कोई न कोई विपत्ति का सांप उसी तरक्की को निगल लेता है और उसकी हालत पहले जैसी ही होती है। यहाँ सांप के रूप में परबतिया बिरजू को देखती है जो उसके परिवार की बरबादी का कारण है। अपने परिवार का बूरा चाहनेवाले बिरजू के बारे मे सोचते-सोचते परबतिया को निंद आती है। निंद में वह सपना देखती है और सपने में अपने परिवार की बरबादी देखती है। फ्रायड़ के अनुसार - ``स्वप्न जागृतावस्था के अनुभवों की ही प्रतिछाया है। व्यक्ति के मानसिक व्यापार निरंतर गतिशील रहते हैं, जागृतावस्था के अनुभव तथा दृश्य निद्रावस्था में साकार रूप धारण करके प्रकट हो जाते हैं।``[49] तात्पर्य यह कि मनुष्य जागृतवस्था में जिस विषय पर सोच-विचार करता है वही स्वप्न के रूप में निद्रावस्था में दिखाई देता है। कहानी की नायिका परबतिया भी अपने परिवार के बारे में दिन-रात सोचती रहती है। उसे लगता है कि बिरजू नाम का यह आदमी सांप बनकर उसे और उसके परिवार को निगल रहा है। इसी बात को वह सपने में भी देखती है। वह सीढ़ी पर चढ़ी है, सांप उसे निगलने के लिए आ रहा है। वह डर के मारे चिल्लाती है- ``सांप ---बचाओ ---सिड्डी।``[50] घबराकर वह जाग उठती है और स्वप्न के संबंध में सोचती हुई कहती है - ``यो सपना नीं, सचमूच की बात ही। सांप लीलने आ गिया हैगा, बिरजू की सकल

में।``[51] तात्पर्य यह कि परबतिया अपने परिवार की बरबादी जागृतावस्था में देखती है और वही स्वप्न में देखती है।

पति की सीमित आय में परिवार का खर्चा पूरा करते-करते नारी अंर्तद्वंद्व में फँस जाती है। इस अंतर द्वंद्व के कारण कई बार उसे अपनी समस्त इच्छाओं का दमन भी करना पड़ता है। मधु किश्वर की कहानी `बीस या पच्चीस` में कहानी नायिका मिन्ना के मानसिक अंर्तद्वंद्व का चित्रण मिलता है। मिन्ना `नौकरानी` भगवती पर तरस खाकर अपने परिवार की हालत खस्ता होने पर भी उसे अपने घर का कपड़े धोने का काम सौंप देती है। परंतु काम का मोल तय करने में हमेशा इस उधेड बून में रहती है कि उसे मजदूरी के रूप में कितने रूपये दिए जाएँ, बीस या पच्चीस ? कभी-कभी घर में जादा काम होता है और कोई आना-कानी किए बिना भगवती उसे पूरा करती है, तो मिन्ना सोचती है - ``बेचारी में पता नहीं कहां से उतनी जान आती होगी। पांच-पांच घरों का काम करने के लिए। यहां तो एक अपने घर का ही काम नहीं संभल पाता। --- अच्छा चलो `25` रूपये दे दूंगी उसका भी तो कुछ बने।``[52] यहां मिन्ना की संवेदनशीलता प्रकट होती है। गरीब भगवती के प्रति उसका दया-भाव नजर आता है। परंतु जिस दिन घर में कोई काम नहीं होता, धोने के लिए कपड़े जादा नहीं होते तो मिन्ना सोचती है - ``हर रोज चाय का कप देती हूँ। बाजार में तो ऐसा बड़ा कप `50` पैसे का भी न मिले। और फिर ऊपर से जो बचा-खुचा खाना होता है, दे देती हूँ।``[53] तात्पर्य यह कि मिन्ना की आर्थिक हालत भी कोई अच्छी नहीं है। इस बात का एहसास होते ही मिन्ना पच्चीस की बीस रूपये पर आती है। ऊपर से भगवती की चाय ओर बचे-खुचे अन्न का हिसाब लगाती है। इस प्रकार मिन्ना दिन में कई बार बीस तो कई बार पच्चीस पर आती है। उसका मन घड़ी के पेंडुलम की तरह बीस-पच्चीस के बीच हिलता रहता है। इस तरह के अंर्तद्वंद्व के कारण नारी को कई बार अपनी इच्छा का दमन करना पड़ता है। फ्रायड के अनुसार -``मानसिक अंर्तद्वद्व के परिणामस्वरूप ही दमन की प्रक्रिया होती है।``[54] कहानी के अंत में मिन्ना भी इस मानसिक अंर्तद्वंद्व के कारण अपनी इच्छा को दबाकर, उसका दमन कर भगवती को दूसरे दिन से कपडे धोने का काम न देने का निर्णय लेती है।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि परिवार चलानेवाली गृहिणी नारी के सामने पति की सीमित आय, पति की व्यसनाधीनता और नक्कारा वृत्ति के कारण अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित होती है। जिनके कारण नारी आहत होती है। वह स्वप्न के द्वारा कभी परिवार की उन्नति देखती है तो कभी अपनी

तथा परिवार की बरबादी देखती है। तो कभी मानसिक अंर्तद्वंद्व में फंसकर अपनी इच्छाओं का दमन करती है।

2. पति द्वारा पीड़ित नारी का मनोविज्ञान :-

शादी के उपरांत नारी पिता का घर छोड़कर पति के घर नई आशा, आकांक्षाएँ लेकर आती है। ससूरालवालों के साथ-साथ पति भी उससे प्रेम करनेवाला हो तो उसका जीवन सफल होता है। वह अपने-आप को दुनियाँ की सबसे खूश-किस्मत समझती है। परंतु जिस नारी को पति तथा परिवारवालों से पीड़ित किया जाता है, उनकी मानसिक स्थिति बहुत ही बिघड़ जाती है। उसे तरह-तरह की मानसिक यातनाओं से गुजरना पड़ता है। ऐसी दु:खों से त्रस्त एवं पीड़ित नारी को अपने आस-पास अपने जैसी कोई भी दु:खी नहीं लगती। वह समझती है कि दुनियाँ में सिर्फ वही दु:खी है, अन्य कोई नहीं। मधु किश्वर की कहानी `बीस या पच्चीस` में चित्रित नौकरानी भगवती का पति उसे लातों और घुसों से मारता-पीटता हैं, गालियाँ देता है। इतना ही नहीं तो घर में कुछ पैसे देने की बजाय पत्नी से ही पैसे लेता है। साथ ही घर के सदस्यों के सामने ही अपनी हवस मिटाने की कोशिश करता है। जब मिन्ना भगवती को खुश रहने का आशीर्वाद देती है तो भगवती कहती है - ``यह कोठीवाली बीबियाँ क्या जाने सब आराम है -आदमी आके तनख्वाह हाथ में थमा देता है - कभी ऊँचा शब्द नहीं बोलते सुना। खुशी तो तुम्हारे जैसों के नशीब में है। मैं कहां से खुशी लऊँ अपने लिए।``[55] तात्पर्य, भगवति सिर्फ अपने ही दु:ख -दर्द के बारे में जानती है, औरों के नहीं। अत: समझती है कि कोठी में रहनेवाली सभी औरते सुखी हैं। दु:ख तो सिर्फ उसी के हिस्से में आया है।

``यूँ तो `पति` शब्द का अर्थ ही है पत अर्थात इज्जत रखनेवाला, सम्मान -रक्षक।परंतु आज के भौतिकवादी युग में जहाँ `अर्थ` एवं `स्वार्थ` ने मानवीय मूल्यों का नाश किया है संबंधों को विघटित किया है वही पति-पत्नी संबंधों में भी बहुत बदलाव आया है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि पत्नी की इज्जत का रक्षक `पति` ही भक्षक बन जाता है।``[56] तात्पर्य, यह कि अपने निजी स्वार्थ के लिए पति अपनी पत्नी की इज्जत भी निलाम कर देता है। अशोक गुप्ता की लिखी कहानी `काली खुशबू का फूल` की अदिति का पति अस्थाना धर्मपरायण व पतिपरायण पति को परमेश्वर समझनेवाली अदिति को अपनी पदोन्नति के लिए अपने कार्यालय के अधिकारियों के साथ सोने पर मजबूर करता है। जैसे-जैसे उसकी पदोन्नति की लालसा बढ़ती है, वैसे-वैसे अधिकारियों की संख्या भी बढ़ती जाती है। इस बात का

आदिति के दिमाग पर बूरा असर पड़ता है और वह अपने-आप को एक वेश्या समझती है। अस्थाना के मरने के बाद आदिति को सुहाग की निशानी `चुडियाँ` को तोडने के लिए कहा जाता है तो वह कहती है - ``उनकी पत्नी मैं थी ही कब विपुल, जो मैं उनके मरने पर चुडियाँ फोड लूँ। चुडियाँ सोहाग नहीं शौक भर है मेरा। नहीं तो, मर तो वह उसी दिन गए थे जिस दिन निगम जिंदा हुआ था।``[57] तात्पर्य आदिति मनोवैज्ञानिक दबाव के कारण पति की इच्छा पूर्ति के लिए अफसरों की सेज सजाती है। वह अपनी सभी भावनाओं का दमन करती है। पति के मरने के बाद वह सभी बंधनों को तोड़ देती है और अपने मित्र विपुल से कहती है - ``मैं कब वेश्या नहीं थी अस्थाना के साथ ! वेश्या तो मैं उसी दिन हो गई थी विपुल जिस दिन मैंने जाना था कि अस्थाना के भितर मैं पत्नी नहीं बस एक औरत भर हूँ, और फिर भी मैंने उसे अपने साथ सोने दिया था।``[58] तात्पर्य यह कि अत्याचारों को सहते-सहते नारी इतनी पीड़ित होती है कि वह कुंठा से ग्रस्त हो जाती है, परंतु अवसर मिलते ही वह अत्याचार के खिलाफ विद्रोह करती है। बुटा सिंह की लिखी कहानी `तीन सतियाँ` में चित्रित भोला पर जब परिवार के पुरूष ही लैंगिक अत्याचार करते हैं, तब उस अत्याचार को न सहकर भोला विद्रोह कर उठती है। जैसे - ``मांजी तुम्हारा खसम एक था, मेरी सास के दो-दो और मेरे तीन -तीन। एक साल होने को है, इन तीनों को दिल, दिमाग और जिस्म पर झेल रही हूँ। पर अब मैंने फैसला कर लिया है कि नक्कारखाने में तड़फती रूहें चूप नहीं रह सकती ----माजी, चलो, मेरे साथ चलो ---तुम पैट्रोल का गैलन पकड़कर तीसरी मंजिल पर खड़ी हो जाओ -- और सासू मां तुम बीच की छत के बड़े दरवाजे में खड़ी हो जाओ । मैं सबसे नीचे सहन में पैट्रोल और पिस्तौल लेकर खड़ी हो जाऊंगी ---किसी को पता नहीं लगेगा कि किसने किसको मारा और आग लगी ! आज गंदे लहू को खत्म करके हम खुद भी साथ ही जल मरेंगी, क्योंकि हम, सत्तियाँ हैं सतियाँ ---!``[59] तात्पर्य यह कि अत्याचार सहना जब असह्य हो जाता है तो नारी विद्रोह करती है। उसका विवेक उसका साथ छोड़ देता है और वह मरने मारने पर उतारू होती है।

सत्यपाल सक्सेना की लिखी कहानी `अंधेरे के विरूद्ध` में कहानीकार ने एक ऐसी नारी का चित्रण किया है, जो पति, सास व ननद के अत्याचारों से छुटकारा पाने के लिए छटपटाती है। कहानी की नायिका वसुधा पति तथा परिवार के अन्य सदस्यों की दी पीड़ा से असह्य होकर आर्थिक दृष्टि से स्वाधीन बनने का विचार करती है। परंतु वह अपने पति व सास के विरुद्ध जाकर नौकरी नहीं करना चाहती, अत: नौकरी करे या न करे इस अंर्तद्वंद्व में फस जाती है। वह अपनी पीड़ा के बारे में किसी और

को बताती है, तो कोई भी उसका पक्ष नहीं लेता सभी उसे वसुधा की तरह अत्याचार सह लेने की सलाह देते हैं। वसुधा आहत् होकर सोचती है - ``मैं सिर्फ वसुधा नहीं हूँ। एक औरत भी हूँ, किसी सामान्य औरत की तरह एक औरत। वसुधा नाम होने से सभी लोग मुझसे यह आशा क्यों करते हैं कि मैं धरती की तरह सबकुछ सहन करती रहूँगी ----चूपचाप ---अनंतकाल तक !``[60] तात्पर्य यह कि वसुधा को अपने नाम से ही चीढ़ होती है, जो धरती का पर्यायवाची है। अंत में वसुधा अपनी आत्मपीड़ा को बचाने के लिए नौकरी करने का निर्णय लेती है। परंतु सास और पति द्वारा वह इतनी पीड़ित हुई थी कि उनके अत्याचार के कारण दब-सी गई थी, अत: अपने इस निर्णय पर उसे आश्चर्य होता है। वह कहती है - ``न जाने इतना कठोर हो जाने की शक्ति मुझमें कहां से आ गई थी।``[61] तात्पर्य, पति के डर से वसुधा इतनी दब गई है कि खुद अपने निर्णय पर ही उसे अविश्वास-सा होता है।

कोई संवेदनशील नारी किसी दूसरी नारी की पीड़ा को देखती है तो उसे अपने गत पीड़ित जीवन की याद आती है और उसके मन में उस पीड़ित नारी के प्रति सहानुभूति निर्माण होती है। बूटा सिंह की कहानी `तीन सतियाँ` में बहु सत्याराणी की पीड़ा को महसूस कर संतो को अपना गुजरा हुआ कल याद आता है और साथ में याद आते हैं पति द्वारा उस पर किए अत्याचार। उस अत्याचार को याद कर वह अपने बेटे से कहती है - ``तेरा बाप मेरे सामने बरवालों की लड़की मंदा को लेकर अंदर चला जाता था और थोड़ी देर बाद बाहर निकलकर कहता, "संतो, हमारे वास्ते दूध गरम कर ला!"[62] ऐसी प्रताड़ना और अपमान को वह चूपचाप सहती है। सत्यारानी की पीड़ा देखकर अपने इसी दु:ख व पीड़ा का उसे स्मरण होता है और उसे सत्यारानी से हमदर्दी होती है। जैसे- ``-----रानी, सो गयी क्या ? ----- अच्छा, सो जा मेरी चन्नो !----- पता नहीं, रात भर बेचारी को नींद आती भी है या नहीं ----।``[63] तात्पर्य यह कि किसी और की पीड़ा को देखकर नारी को अपनी पीड़ा का स्मरण होता है और वह पीड़ित होती है।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि पति द्वारा पीडित होकर नारी अंर्तद्वंद्व, कुंठा, दमन, क्रोध, दु:ख आदि मानसिक विकारों का शिकार बनती है। पति द्वारा दी जानेवाली तरह-तरह की अनंत यातनाओं को सहते-सहते वह अंतरिक मनोभावों को दबाती है। वह अपनी इच्छा, आशा व आकांक्षाओं का दमन कर परिवार के सभी लोगों से समायोजन करने का प्रयास करती है।

3. बाल विवाहित नारी का मनोविज्ञान :-

भारतीय समाज में दहेज से बचने के लिए व अपने कर्तव्य को जल्द से जल्द पूरा करने के लिए आज भी लड़कियों के कम आयु में विवाह किए जाते हैं। कई मां-बाप के सामने निर्धनता और असहायता की समस्या होती है, अत: वे विवाह, शादी, निकाह, पति, ससूराल का मतलब समझने में असमर्थ बेटियों के भी विवाह किए जाते हैं।ऐसी स्थिति में लड़की की मानसिक दशा बिघड़ जाती है। वे अपनी हमउम्र लड़कियों को खेलता देख उनके साथ खेलने के लिए लालयित हो जाती हैं। जगवीर सिंह वर्मा की कहानी `आधी उम्र की पूरी औरत` की परसादी की शादी बचपन में हो जाती है। उसकी मानसिक दशा का वर्णन करते हुए लेखक ने लिखा है - ``संग के लड़कियों के साथ बतियाने की, खेलने-कुदने की, सलवार कुर्ता पहनने की, खाने-पीने की। रामप्रसाद के अलावा वह किसी दूसरे हम-उम्र लडके के बारे में सोचती है। ऐसे लडके के बारे में जो मन को भाये।``[64] तात्पर्य यह कि परसादी अपनी हमउम्र लडकियाँ को खेलते-कूदते देखती है तो उसकी भी बालसुलभ प्रवृत्ति जागृत होती है।

शारीरिक पवित्रता बनाये रखने के हेतु भारतीय समाज में विवाहित नारी को एक-दो बच्चे होने तक किसी काम के लिए अकेली बाहर नहीं जाने दिया जाता। परसादी को भी घर से बाहर नहीं निकलने दिया जाता समाज की वासनायुक्त नजरों से बचाने के लिए उसे घर की चार दीवारी में ही बंद किया जाता है। उसका मन घिन, भय और दु:ख से भर जाता है। वह खीज और झुंझलाहट से भर जाती है इसी मानसिक दशा में रामप्रसाद उसे याद आता है और रामप्रसाद द्वारा उसके मुँह के पास मुँह ले जाने की घटना भी याद आती है। तब वह अपने-आप ही बड़बडाती है - ``हट --मुँह से बीड़ी की कितनी बुरी बास आती है।``[65] तात्पर्य यह कि जब गुमसुम अवस्था में अपने जीवन तथा हमउम्र लड़कियों के बारे में सोचती है तो उसकी स्मृति में पति की याद आती है। वह घृणा से उस याद को अपने दिमाग से हटा देती है।

जैसे-जैसे परसादी सोचती जाती है तो उसके विचार प्रौढ़ता की ओर झुके हुए दिखाई देते हैं। रामप्रसाद को आने में देर होती है, तो उसके ``मन में एक क्षण के लिए गुदगुदी उठती है आँखे भी एक अजीब से रंग से सराबोर हो उठती है और उनमें नृत्य तैर उठता है। शरीर भी तब एक अजीब से आनंद की पुलक से भर उठता है, लेकिन दूसरे ही क्षण वही मन घिन, भय और दु:ख से भर जाता है।``[66] तात्पर्य यह कि छूटता बचपन और आती जवानी के बीच परसादी को कभी-कभी रामप्रसाद की यौन चेष्ठाओं में मजा

आता है, परंतु रामप्रसाद की उम्र और उसके मुँह से आनेवाली बीड़ी की बास के कारण अगले ही पल परसादी उससे घृणा करती है। कभी-कभी रामप्रसाद के प्रति कृतज्ञता की भावना परसादी के मन में जागृत होती है। रामप्रसाद उन मां -बेटी के वास्ते समाज के साथ लड़ रहा है, इस बात को सोचते ही उसका मन कृतज्ञता से भर उठता है। वह सोचती है रामप्रसाद उनके लिए भाग-दौड करता है तो उसके -``बदले में -- --- आप ही आप सोचकर मुस्करा जाती है परसादी बाल सुलभ चंचलता और नए उन्माद की मादकता से तब उसकी आँखें चमक उठती है, शरीर रोमांच अनुभव करने लगता है।``[67] तात्पर्य यह कि परसादी रामप्रसाद से कभी घृणा व नफरत करती है कभी कृतज्ञता से उसका मन भर उठता है तो कभी रामप्रसाद के प्रति उसके मन में प्यार निर्माण होता है। और वह अंर्तद्वंद्व में फंस जाती है।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि बचपन में विवाह होने के कारण परसादी, सुख की लालसा, घृणा, क्रोध, कृतज्ञता आदि मानसिक स्थिति में घीर जाती है।

4. नौकरी पेशा नारी का मनोविज्ञान :-

आधुनिक युग में नारी चार दीवारी से बाहर आकर अपने परिवार की आर्थिक विपन्नता दूर करने के उद्देश से नौकरी करने लगी है। अब वह पति की आर्थिक आय पर निर्भर नहीं है। आज वह विविध कार्यालयों शिक्षा विभागों, वैद्यकीय विभागों, अदालतों आदि जगहों पर नौकरी करके आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र होने की कोशिश कर रही है, कुछ मात्रा में उसे सफलता भी प्राप्त हुई है। परिणामत: आज की नारी अपनी आर्थिक स्वाधीनता की ओर ध्यान दे रही है क्योंकि अब वह जान चूकी है - ``अर्थ की कमजोरी व्यक्ति के जीवन की सबसे बड़ी कमजोरी है, जिसके बिना मनुष्य ऐशो-आराम की जिंदगी प्राप्त नहीं करता। अर्थ बिना व्यक्ति का जीवन गतिहीन, दुर्बल बन जाता है।``[68] तात्पर्य यह कि शिक्षा के कारण नारी आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र होने जा रही है। हो रही है।

आधुनिक युग से पूर्व काल में नारी आर्थिक दृष्टि से पति पर निर्भर थी परंतु आज आर्थिक दृष्टि से परिवार को ऊपर उठाने में वह पति का हाथ बटां रही हैं। घर में घरेलू कामकाज और कार्यालय में नौकरी इन दोनों मोर्चे पर नारी लड़ रही है। परिणामत: उसका व्यक्तित्व परिवार और कार्यालय में बट गया है। ऐसे वक्त नारी चाहती है कि घरेलू कामकाज में पति तथा अन्य परिवार के सदस्य उसकी मदद करे परंतु पुरूषी अहम् भाव व अहंकार के कारण पति उसकी मदद नहीं करता। कर्तारसिंह दुग्गल की कहानी `करवा चौथ` में गीतांजली पति के इसी अहं के कारण परेशान है। वह अपनी सहेली से

कहती है - ``कभी तुमने यह भी सुना है जीतां कि मर्द का काम सिर्फ औलाद पैदा करना है ? साफ-सुथरे, सजे हुए बच्चे को लाड़ करके बिगाड़ना है ? मल-मूत्र के लिए बस मां होती है। मैंने उससे कहा, मियां! तुम्हें भी दफ्तर पहुँचना होता है और मुझे भी। तुम भी तनख्वाह पाते हो, मैं भी। मेरी तनख्वाह तुमसे चार पैसे कम ही सही। सुबह, एक बच्चे को तुम तैयार कर दिया करो, दूसरे को मैं संभाल लूँगी।``[69] गीतांजली मानती है कि जब पति की तरह वह भी परिवार की आर्थिक मदद करती है तो पति ने भी उसकी घरेलू कामकाज में मदद करनी चाहिए।

पत्नी को अगर पति की कोई बात अच्छी नहीं लगती और पति की उसी बात या बूरी आदत का एहसास बार-बार करना पड़े तो वह खिज उठती है। उसे पति की घिन आने लगती है। इस मनोवैज्ञानिक तथ्य से पीड़ित गीतांजली अपनी सहेली जीतां के सामने अपने पति की बुराई करती हुई कहती है - ``जीतां यह बताओ, खाते समय मर्द की ठोढ़ी बेशक हिलनी चाहिए, मेरी खुद की हिलती है। लेकिन इतनी तो नहीं जितनी मेरे मियां की हिलती है। तोबा !तोबा! जैसे चक्की के पाट चल रहे हो। मेरा तो दिल कच्चा-कच्चा होने लगता है।``[70] गीतांजली को अपनी पति की ढोढी हिलने के कारण उससे घृणा निर्माण होती है। जिसके प्रति मानसिक लगाव कम होता जाता है उसके सभी व्यवहार से घृणा निर्माण होती है यह तथ्य उक्त उदाहरण से स्पष्ट होता है। प्रत्येक आदमी के मन में डर की भावना होती है। गीतांजली के पति में भी यह भावना है, अत: पति-पत्नी के बीच नसबंदी को लेकर जब बहस होती है तो डर के कारण वह गीतांजली को ही नसबंदी करवाने की सलाह देता है तो गीतांजली समझती है कि पति उससे प्यार नहीं करते। इस बात का उल्टा अर्थ लगाकर वह कहती है -``मतलब अगर मरना हो तो तुम क्यों नहीं मरती। इस तरह का भी कोई मियां होगा। तोबा मुझे तो नफरत है ऐसे आदमी से!``[71] इससे स्पष्ट है कि पति के डरपोक स्वभाव के कारण गीतांजली नफरत करती है।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं शिक्षित तथा नौकरी करनेवाली नारी अपने अधिकार के प्रति जागरूक हो गई है। जब अपने अधिकार पर अतिक्रमण होता है तो वह पीड़ित होती है। पति की कोई आदत पसंद नहीं आती तो उसे घृणा करती है। इन्हीं मनोवैज्ञानिक तथ्यों को सामने रखकर गीतांजली का चित्रण कहानीकार ने किया है।

छ. प्रेम में असफल नारी का मनोविज्ञान : -

``मनुष्य के अंदर प्रेम की एक सहज प्रवृत्ति होती है जो स्त्री और पुरूष दोनों में समान रूप से पाई जाती है। अंतत: दोनों ही एक-दूसरे के प्रति समान भाव से आकर्षित होते हैं।``[72] तात्पर्य अगर प्रेम दोनों के मन में हो तो दोनों ओर से आकर्षण निर्माण होता है। यहां आकर्षण अगर आत्मिक हो तो प्रेम अंतकाल तक स्थाई रूप में दोनों के दिल में रहता है। परंतु आजकल बाह्याकर्षण को ही प्रेम कहा जाता है ऐसा आकर्षण समय के साथ कम होता है। तब प्रेमी एक दूसरे से अलग होते हैं। छोड़ने की प्रवृत्त जादा तर लड़कों में होती है। इस तरह प्रेमी द्वारा धोखा मिलने के कारण कुछ युवतियाँ अंतर्मुख बनती है, उन्हें कुंठा घेर लेती है परिणामत: वे विक्षिप्त जैसी व्यवहार करती है। कई एक तो लोक लाज से बचने के लिए अपने परिवार को छोड़कर भाग जाती है और अपनी जीविका चलाने हेतु वेश्यावृत्ति करने लगी है। सत्येंद्र त्यागी की कहानी `शट अप सर` की सरला सुरेश नामक अपने सहपाठी की ऊपरी चमक-दमक देखकर उसकी ओर आकर्षित होती है। कुछ समय बाद सुरेश के साथ उसके अन्य मित्र भी उससे यौन सुख लूटते हैं। नतिजन सरला पेट से रहती है। पेट खाली करने के उद्देश्य से सरला सुरेश तथा उसके मित्रों के पास जाती है परंतु कोई उसकी मदद नहीं करता, अत: वह वेश्यावृत्ति करने लगती है।

सरला के अध्यापक जब सरला को सुरेश के संबंध में पूछते हैं, तब सरला दु:खी स्वर में कहती है -``अगर वह नहीं मिलता तो शायद आज मैं कॉल-गर्ल न होती सर !``[73] तात्पर्य यह कि यहाँ सरला अपनी वेश्यावृत्ति के लिए सुरेश को जिम्मेदार समझती है। परंतु उसने भी सुरेश से कभी सच्चा प्रेम नहीं किया था वह तो उसकी ऊपरी चमक-दमक देखकर ही उसकी तरफ आकर्षित हो गई थी। अत: अपनी गलती के लिए किसी और को दोषी ठहराकर अपने `अहम` को बचाने की मनुष्य की सहज प्रवृत्ति ही सरला के व्यक्तित्व में दिखाई देती है। बीर राजा की कहानी `बदकार` की नायिका शाह से सच्चा प्रेम करती है। अपना बड़प्पन दिखाने के लिए शाह की पढ़ाई का खर्चा पूरा करने के लिए लोगों के कर्जे उठाती है। इस तरह कर्जा उठाते-उठाते वह 10,000 रूपये की कर्जदार बन जाती है। जब शाह उसे छोड़कर विदेश चला जाता है तो बदहवास-सी वह रोते-रोते कहती है - ``मैं लूट गयी - वह शाह मेरा सब कुछ छीनकर ले गया, ---अब मेरा क्या होगा ---मेरे पेट में उसका बच्चा है।``[74] जवानी में हुई गलती के कारण नारी पेट से रहती है। तब बेइज्जती के डर से वह घर भी नहीं जाती। अपना पेट खाली करके लोगों का कर्जा चुकाने के लिए वेश्यावृत्ति को अपनाती है। अपनी वर्तमान हालत पर विचार करने पर बदकार

कहानी की नायिका को पश्चाताप होता है। अब वह समझती है कि शाह उससे प्यार नहीं करता था, प्यार करने का नाटक कर रहा था। अपनी हवस मिटाने के लिए उसके पास आता था। वह कहती है - ``रंडी ही थी मैं उसके लिए। अब मेकप करके, अपने नखरों से दूसरों को खुश करती हूँ। इसमें कोई धोखा तो नहीं होता जो होना होता है पहले से ही मालूम होता है।``[75]

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि प्रेम में असफल नारी की मनोवैज्ञानिक स्थिति का चित्रण करते समय लेखकों ने उन नारियों के दु:ख और पीड़ा को सामने रखा है। उसी के आधार पर उनका मनो वैज्ञानिक चित्रण हुआ है।

ङ. कुँआरी माता का मनोविज्ञान :-

जवानी की दहलीज पर कदम रखते ही युवती अपने निकटतम् युवक के प्रति आकर्षित होती है। आकर्षण का कारण कभी-कभी आत्मिक प्रेम होता है, तो कई बार सिर्फ शारीरिक आकर्षण के कारण ही युवक-युवती एक-दूसरे के करीब आते हैं। यह एक नैसर्गिक प्रवृत्ति है इसमें न युवक का दोष होता है न युवती का ही दोष होता है। शकुंतला चव्हाण के अनुसार - ``नारी पुरूष दोनों अपनी प्रेरणा से एक दूसरे के प्रति आकर्षित होते जा रहे हैं वे प्रेम और कामवासना से प्रेरित होकर एक दूसरे की तरफ आकर्षित होते हैं।``[76] तात्पर्य यह कि स्त्री-पुरूष के बीच परस्पर आकर्षण का भाव कभी प्रेम तो कभी कामवासना दोनों ही होता हैं।

जवानी के हाथों मजबूर इन प्रेमियों से वही गलती होती है जिसे समाज शादी से पहले करना पाप समझता है। उसका नतिजा, युवती पर कुँआरी माता बनने का कलंक लग जाता है। कई बलात्कारित युवतियों को भी इस अवस्था से गुजरना पड़ता है। समाज में ऐसी कुँआरी माताओं पर समाज द्वारा अनेक अत्याचार किए जाते हैं। उनकी संतान को हरामी का नाम दिया जाता है। ऐसी स्थिति में नारी की मनोदशा क्या होती है इसका चित्र क्वीनी ठाकुर ने अपनी कहानी `जानकी` में कथा नायिका जानकी के चित्रण द्वारा किया है। जानकी `अफ्टर केयर होम` में रहनेवाली युवती है। वह किसी वजह से घर से भाग आयी है। परंतु उस संस्था की चार दीवारी में उसका मन नहीं लगता, अत: वह बाहर जाकर कहीं काम करना चाहती है। उसकी यह इच्छा जल्दी ही पूरी हो जाती है। एक दम्पति के यहां बच्चे की देखभाल करने का काम उसे मिल जाता है। जानकी बच्चे की देखभाल करने जाती है और उन्हीं दम्पत्ति के यहाँ रहती है। जब मालकिन घर पर नहीं होती तो जानकी का मालिक उसके साथ जबरदस्ती करता है। अपनी इज्जत

बचाने की खातिर जानकी इस बात की जानकारी किसी को भी नहीं देती, अत: बार-बार उसे अपने मालिक की हवस का शिकार होना पड़ता है। इसका नतिजा यह होता है कि जानकी पेट से रहती है। और इसी कारण उसकी मालकिन उसे फिर `अफ्टर केयर होम` में छोड़ देती है।

जानकी के दिन चढ़ने की बात संस्था की सारी लड़कियों में फैल जाती है। अत: सारी लडकियाँ उससे घृणा करने लगती हैं, उसके साथ ठीक तरह से बात नहीं करती। इतना ही नहीं उसकी अपनी सहेली भी उसे बेइज्जत करती रहती है। इसी कारण जानकी अकेली, अन्य लड़कियों से कटी-कटी रहने लगती है। अपनी सहेली के बारे में बताती हुई वह कहती है- ``उसने हमको दूसरी लड़कियों के सामने बदनाम किया है, बदचलन कहा है। अब बताइए न बहनजी, उनसे कैसे दोस्ती रखी जा सकती है, जो बेइज्जती करें ! इज्जत तो सबको प्यारी है।``[77] तात्पर्य यह कि अपनी बेइज्जती होना जानकी को अच्छा नहीं लगता। उसके सम्मान व अहम को ठेस पहुँचती है। यह एक मनोवैज्ञानिक कारण है कि जहां इंसान को सम्मान नहीं मिलता, उसे ताने दे-देकर पीड़ित किया जाता है, उस समाज, माहौल व व्यक्ति के संपर्क में मनुष्य नहीं रहना चाहता। वह अकेले ही रहने की आदि बन जाती है।

जानकी मां बन जाती है।उसके बेटा होता है। बड़े प्यार से वह उसका नाम`ललमुनवा` रख देती है। ललमुनवा के रूप में संस्था में रहनेवाली लड़कियों को बना-बनाया खिलौना मिल जाता है। वे सभी खुश होती हैं। बच्चे के प्रति प्यार जताती हैं। `अफ्टर केयर होम` द्वारा इन लड़कियों की शादियाँ भी कराई जाती हैं। समाज में अपने सम्मान को टेंस न पहुँचे इस उद्देश्य से कुँआरी माँ बनने वाली लड़की से कोई शादी नहीं करता। कोई इनसे शादी करने के लिए तैयार भी होता है तो उसके बच्चे को अपनाने में अपने आप को असमर्थ समझता है। जानकी के बच्चे के कारण जानकी को भी कोई स्वीकारने के लिए तैयार नहीं होता। पहले एक आदमी आता है और जानकी को बच्चे के साथ अपनाने के लिए तैयार हो जाता है। जानकी खुश होती है। अपनी शादी की बात सारी लड़कियों को बताती है। दूसरी लडकियों से मेकप का सामान उधार लेकर बनने संवरने लगती है। परंतु समाज के डर से उसका होनेवाला पति बच्चे के साथ जानकी को अपनाने में अपनी असमर्थता प्रकट करता तो जानकी का दिल टूट जाता है। इसी में उसका बच्चा बीमार पड़ जाता है। बीमारी में वह रात-दिन रोता ही रहता है। उसके इस रोने, चिखने-चिल्लाने से जानकी परेशान होती है। एक तो बच्चे के कारण उसकी शादी नहीं होती, ऊपर से उसकी

बीमारी की परेशानी। इन हालातों ने जानकी को पागल-सा बना दिया और इसी पागलपन में जानकी अपने बीमार बच्चे को सूखे कुए में फेंकर मार डालती है।

अक्सर पागलपन में आदमी का विवेक उसका साथ छोड़ता है और उसके हाथों भयानक अपराध हो जाता है। जब पागलपन के दौरे से वह बाहर आता है तो अपने कृत्य पर उसे पछतावा होता है। जानकी भी पश्चाताप करने लगती है। बच्चे को मार डालने के जुर्म में पुलिस उसे पकड़ने आती है, तो चलते समय बड़े ही विनीत और दयनीय भाव से अपने बेटे के प्रति प्यार जताती हुई कहती है - ``ललमुनवा की टोकरी तो ले लेने दो -- उसमें उसका अच्छावाला कपड़ा है। इसे अच्छा अच्छा तो पहना दे इसकी भी तो इज्जत है।``[78] आगे वह अपनी बहनजी से कहती है - ``बहनजी आप ही बताओ बहनजी, इसकी इज्जत नहीं ! हमारे ललमनुवा की इज्जत नहीं है !``[79] इस बात से हमें जानकी की मनोदशा का पता चलता है। अपने बेटे के प्रति प्रेम होते हुए भी अनिच्छा से वह समाज के तानों से तंग आकर अपने बेटे को मार डालती है।बाद में उसे पश्चाताप होता है, और वह रोने लगती है।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि समाज में होनेवाली बेइज्जती से बचने के लिए तथा अपने मान, सम्मान और अहम् की रक्षा के लिए कुँआरी माता बनी नारी अकेली रहने लगती है। कभी-कभी समाज द्वारा दिए जानेवाले तानों से तंग आकर वह अपराध भी कर बैठती है।

च. परित्यक्ता नारी का मनोविज्ञान :-

अक्सर पति अपने अधिकार की गदा पत्नी पर चलाता है। पत्नी अगर पति के इन अत्याचारों को चूपचाप न सहे तो पति अपनी पत्नी को छोड देता है। कोई दहेज पाने हेतु अपनी पत्नी का त्याग करता है। कई बार तो ऐसा होता है कि अपनी झूठी शान और सड़ी-गली मान्यताओं के आगे घर के बड़े-बुढ़े अपने बच्चों की बलि चढ़ा देते हैं। अपने घमंड में चूर होकर वे बच्चों का भला सोचने की बजाय उल्टा उन्हें यातनाओं के भँवर में छोड़ देते हैं। इसी बात को लेकर नासिरा शर्मा ने `दस्तक` कहानी में शबाना का चित्रण किया है जिसको अपने पति काजिम से सिर्फ इस कारण अलग होना पड़ता है कि दोनों परिवारों में कुछ कहा-सूनी हो गई है। शबाना और काजिम बचपन से एक-दूसरे को जानते-पहचानते हैं, साथ-साथ खेले हैं और आपस में प्रेम भी बहुत करते हैं। परंतु इनकी इच्छा के विरूद्ध घरवालों के कहने पर उन दोनों को अलग होना पड़ता है। इस सदमें को सहन न कर शबाना बीमार पड़ती है। कई वैद्यों को दिखाया परंतु कोई फायदा नहीं हुआ। उसके लिए काजिम से मिलन ही बहुगुणी दवाई है। वह सोचती है

कि सब लोग जानते हैं कि मैं काज़िम के बिना ज़िंदा नहीं रह सकती, परंतु सभी अंजान बने रहे हैं। जैसे- ''सब कैसे अंजान बन गए हैं,कोई कुछ सोचता क्यों नहीं ----अम्मी भी मेरे लिए कुछ नहीं कर पाती आखिर क्यों ?''[80] तात्पर्य यह कि शबाना काज़िम की चाहत में बीमार पड़ गई है, काज़िम से मिलाप करने के लिए अम्मी की मदद की अपेक्षा करती है।

शबाना की तीव्र इच्छा होती है कि शहर जाने से पहले काज़िम से मिले उसके साथ बातें करे। उसे अपनी मौत निकट दिखाई देती है। वह सोचती है - ``शहर जाने से पहले वह उन्हें एक नजर देख ले। अब ज़िंदगी का भरोसा भी क्या है ? खुद जाए उनके घर ? यदि दरवाजा खोलने चचाजान आये तो ? एक नये झगडे को शुरूआत हो जाएगी अम्मी को ताने मिलेंगे। अब्बा बददिल होकर शिकार खेलने निकल जायेंगे और घर में उसकी सिसकियाँ गूँजेगी।''[81] तात्पर्य यह कि मिलने की तीव्र इच्छा होने के बावजूद भी परिवार में निर्माण होनेवाले कलह का डर और मानसिक अंतर्द्वंद्व के कारण शबाना अपनी इच्छा का दमन करती है।

इंसान अगर बहुत दु:खी हो जाय तो उसे गत सुखों की याद आती है। उनके बारे में सोचते-सोचते वह सपनों में भी उस सुख की कल्पना करता है। शबाना भी विरह की पीड़ा में जलते हुए काज़िम के साथ बिताए प्यार भरे जीवन के अमूल्य क्षणों को याद करती है। और सपने में भी उन्हीं क्षणों को देखती है। जैसे - ``सपना उसे याद आता है। गांव के घर के पासवाले खंडहर में थी। टूटी दीवारों और गिरी छतवाले कमरे के कोने में टूटी बल्ली के टुकड़े पर बैठी थी। उसके दोनों हाथ काज़िम के हाथों में थे। वह धीरे-धीरे नाखूनों को सहला रहा था।''[82] तात्पर्य यह कि दु:खी शबाना गत बातों को याद कर उन्हें सपने में देखती है और उसके द्वारा सुखानुभूति प्राप्त करती है। स्वप्न द्वारा इच्छापूर्ति का सुख पाना मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है। निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि परित्यक्ता नारी अगर अपने पति को मिलने की इच्छा रखती है तो उसके मिलन के कारण होनेवाले परिणामों के बारे में सोचकर वह डर जाती है। मिले या न मिले ऐसी स्थिति होती है तब वह मानसिक अंतर्द्वंद्वं का शिकार बनती है और इसी के फलस्वरूप अपनी इच्छा का दमन करती है। अपने वर्तमान दु:खों में उसे पति के साथ गुजारे सुखमय क्षणों की याद आती है और उसी को सपने में देखकर सुख प्राप्त करने का प्रयास वह करती है।

छ. समाज द्वारा पीड़ित नारी का मनोविज्ञान :-

जिस नारी का समाज में कोई सहारा न हो उस नारी को समाज में रहनेवाले असामाजिक

तत्व पीडित करते हैं। अपनी स्वार्थी वृत्ति के कारण अकेली औरतों पर अत्याचार करने में उन्हें कोई झिझक नहीं होती। अकेली होने के कारण उसे अपनी जीविका चलाने हेतु कामकाज करने के लिए तथा अन्य कार्यों को पूरा करने के लिए घर से बाहर जाना पड़ता है।सुनंत कौर के अनुसार - ``जब तक नारी का क्षेत्र घर तक सीमित था उसका शोषण घर की चार दीवारी में किया जाता था, परंतु जैसे-जैसे नारी ने अपने कदम घर से बाहर निकाले हैं, उसे शोषण के नए-नए रूपों का सामना करना पड़ रहा है। कभी उसकी शारीरिक कमजोरी का लाभ उठाकर उससे बलात्कार किया जाता है, तो कभी उसकी आर्थिक जरूरतों के कारण उसे जलील किया जाता है।``[83] तात्पर्य यह कि अकेली नारी ने जब भी अपनी जरूरतों को पूरा करने हेतु घर से बाहर कदम रखा, समाज में रहनेवाले असामाजिक तत्वों ने उसे पीड़ित किया। उस पर बलात्कार किया। और नारी अपने पर हुए इन अत्याचारों को असहाय होकर सहती रही है। हरमन चौहान की कहानी `छाग` की गलकू अपनी माँ के मरने के बाद अकेली हो जाती है। समाज में रहनेवाले वासनांध कीड़े उसे अपनी हवस का शिकार बनाने की ताक में रहते हैं। परंतु वह किसी के हाथ नहीं आती इसी बात से चिढ़कर उसे भोगने की इच्छा रखनेवाले लोग उस पर गोठिया के खून का झूठा इल्जाम लगाते हैं।

अपने ऊपर लगाए झूठे इल्जाम के कारण बदहवास-सी होकर गलकू जज्ज साहब के सामने जान की पर्वा न करते हुए उन समाज के ठेकेदारों का भांडा फोड़ती है जो उसके विरूद्ध बयान देने आये हैं और जिन्होंने कभी उसके साथ अन्याय किया था। वह कहती है - ``जस्सा`ब, गवाह नंबर एक, वो ऽऽ जो सामने बैठा है, धंधे से बनिया है। जात से भले ही ऊँचा महाजन होगा, लेकिन हरकतों से बहुत कमिना है। मैं छोटी थी, तब मझे अपनी दूकान में बुलाकर मीठी-मीठी गोलियाँ देता था और बदले में मेरी छाती की गोलाइयाँ नापता था। ---गवाह नंबर पांच, उस भडवे को देखो, जो दिनभर निठल्ला रहता है। मेरी माँ का दलाल बनकर उससे धंधा करवाता था। मेरे बाप को भड़काकर पहले मेरी माँ की नाक कटवायी और फिर घर से निकलवा दिया।``[84] समाज में रहनेवाले इन ठेकेदारों के अत्याचारों से इतनी आहत व पीड़ित होती है जिसके कारण उसकी जीने की इच्छा ही समाप्त हो जाती है और वह क्रोधावेश में इन ठेकेदारों की करतूत अदालत में बताती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से हम कह सकते हैं कि नारी जहाँ तक हो सकता है अपने पर होनेवाले अत्याचारों को पचा लेती है परंतु जब वह अत्याचार के खिलाफ उठती है तो सभी अत्याचारियों को दंडित किए बिना चैन की सांस नहीं लेती।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि अकेली नारी समाज के अत्याचार सहते-सहते इतनी पीड़ित होती है कि पीड़ा के असह्य होने पर विद्रोह कर उठती है। उसे अपनी जान की बिल्कुल पर्वा नहीं रहती है।

ज. बलात्कारित नारी का मनोविज्ञान :-

अकेली स्त्री को देखते ही कामांध पुरूष अपनी काम-वासना तृप्त करने के लिए लालयित होते हैं। वह राजी होती है तो ठीक, नहीं होती तो जबरदस्ती उसके साथ संभोग किया जाता है। औरत की इच्छा के विरूद्ध उसके साथ किए जानेवाले शारीरिक संभोग को बलात्कार नाम दिया जाता है। जिसके कारण निर्दोष होते हुए भी औरत ही पीड़ित हो जाती है। महेश दर्पण के अनुसार - ``बलात्कार वास्तव में स्त्री के दिलो-दिमाग को झन्ना देनेवाली एक ऐसी बर्बरता है, जिसकी वजह से वह जीवन भर पागलपन या नीमपागलपन की यातना झेलने को भी मजबूर हो सकती है।``[85] तात्पर्य यह कि बलात्कार की मार न केवल स्त्री के शरीर पर बल्कि दिलो-दिमाग पर भी होती है। बीर राजा की कहानी `भोली` की बलात्कारित नायिका भोली बलात्कार होने के बाद अपना दिमागी संतुलन खो बैठती है। वह किसी को अपने पास तक नहीं आने देती। खुद को अपवित्र समझकर किसी के द्वारा अपने बदन को छुना उसे गंवारा नहीं है। उसका मंगेतर उसे मिलने आता है, तो वह कहती है -

``निकल जाओ !``

``क्यों आये ? अब क्या बचा है ?``

``चूप करो मुझे मत छुओ।``[86]

भोली की इन बातों को सुनकर उसका मंगेतर उसे कहीं और चलने को कहता है तो वह कहती है - ``कही जाने से क्या मैं बदल जाऊंगी ?``[87] तात्पर्य यह कि बलात्कारित नारी खुद को अपवित्र अछुत समझती है। खुद को किसी की पत्नी होने के काबिल नहीं समझती। इसी मानसिक आघात के कारण उसे दौरे भी पड़ते हैं। जिसमें वह किसी भी करीबी आदमी को बलात्कारी समझकर नोचने-खचोटने लगती है। भोली के पागलपन का वर्णन करते हुए लेखक ने लिखा है - ``नहीं----नहीं, वह मुझ पर झपटी, `मार डालूंगी बदमाश ----छोड़ मुझे ----` उसके दात मेरे गालों में गढ़ गए और मेरे सिर के बाल उखड़कर उसके हाथों में चले गये।``[88] तात्पर्य यह है कि बलात्कार के सदर्भ से नारी इतनी आहत होती है कि कभी

उस पर पागलपन सवार होता है तो कभी वह गुमसूम-सी बैठती है। बलात्कारित नारी की इस स्थिति के बारे में महेश दर्पण ने लिखा है - ``बलात्कार अपने-आप में किसी की मानसिक हत्या है, बल्कि हत्या से भी भयंकर, जो एक स्त्री को अक्सर चलती फिरती लाश बनाकर जिंदगी ढ़ोने को मजबूर कर देता है।``[89]

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि बलात्कार में नारी का कोई दोष नहीं होता अपितु उसका बलपूर्वक लैंगिक शोषण किया जाता है। परंतु बलात्कार के कारण उसके दिलों-दिमाग पर एक प्रकार का डर हावी होता है और ऐसी नारी उसे विशिष्ट परिस्थिति के आते ही डर जाती है। या किसी करीबी आदमी पर झपटकर उसको नोचने-खचोटने लगती है।

झ. विधवा नारी का मनोविज्ञान :-

हिंदी साहित्य की लगभग सभी साहित्यिक विधाओं में विधवा नारी के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। विधवा नारी की अवस्था अत्यंत दयनीय है। उन्हें समाज में हीन तथा अशुभ समझा जाता है। पति के मरने के बाद अकेले जीवन बिताना नारी के लिए दुश्वार हो जाता है। सुनंत कौर के अनुसार - ``असमय ही जीवन साथी की मृत्यु हो जाने पर पीछे छुट गए व्यक्ति का जीवन अत्यंत एकाकी व यातनामय बन जाता है।``[90] आगे विधवाओं के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा है - ``अभी कुछ समय पहले तक तो भारतीय समाज में विधवा नारी की दशा अत्यंत दयनीय थी। उसे अशुभ व घृणित समझा जाता था व उस पर विभिन्न शारीरिक, मानसिक अत्याचार किए जाते थे।``[91] तात्पर्य यह है कि आज पहले की अपेक्षा विधवा नारी की स्थिति कुछ मात्रा में बदल चुकी है। परंतु आज भी विधवा नारी को अनेक अत्याचारों को सहना पड़ता है।

परिवार और समाज में हीन समझी जानेवाली विधवाओं के सामने अनेक सांस्कृतिक, धार्मिक समस्याओं के साथ-साथ लैंगिक इच्छा पूर्ति की समस्या भी होती है। समाज की आलोचनाओं से बचने के लिए विधवा काम-भावना को पूर्ण करने की इच्छा को दबा देती है। उसका दमन करती है। डॉ. कमला आत्रेय के अनुसार - ``जो विचार, कार्य एवं इच्छाएँ समाज विरोधी हैं, समाज के आदर्शों के प्रतिकूल है, जिन्हें समाज के भय से नैतिक मन के भय से हमारा चेतन मन या अहम् स्वीकार नहीं करता उनका वह दमन करता है।``[92] आशय यह है कि जिस बात को या कार्य को समाज का विरोध हो वह कार्य आदमी किसी भी कीमत पर नहीं करता। समाज में बेइज्जत होने के डर से जसबीरसिंह वर्मा की कहानी `आधी उम्र की पूरी औरत` की सूदामा लैंगिक इच्छा पूर्ति करने की मन में लालसा होते हुए भी उसका

दमन करती है। और स्वप्न जैसे मार्ग को स्वीकार कर अपनी काम-वासना पूरी करने का प्रयास करती है। जैसे - ``सुदामा चाहती है, उसे खूब गहरी निदं आये, सपने में बहोरन दीखे, उससे सुख-दु:ख की बातें करे। प्यार करें, उसके ढिंग सोये !``[93] सुदामा अपनी लैंगिक इच्छा पूर्ति के लिए अपने दामाद रामप्रसाद का सहारा लेना चाहती है परंतु समाज द्वारा की जानेवाली आलोचना व बेइज्जती के डर से वह अपनी इच्छा का दमन करती है और इच्छा पूर्ति के लिए स्वप्न का सहारा लेती है। आरिगपूडि की कहानी `उलझे संबंध` की अंबिका देवी इस मामले में विद्रोही कदम उठाती है। अपनी लैंगिक इच्छा पूर्ति के उद्‌देश्य को सफल बनाने हेतु वह अपने दामाद के साथ शारीरिक संबंध जोड़ती है। मद्रास में उनके इस अनैतिक संबंध की समाज में चर्चा होने लगती है तो वह अपनी बेटी शीला के कहने पर मद्रास से सिंगापुर भाग आती है।

सुख प्राप्ति की आशा से अंबिका देवी अपने दामाद के साथ भाग जाती है। अपने इस कृत्य पर आगे चलकर उसे पश्चाताप होता है। अपनी गलती का एहसास होते ही वेदना से उसका दिल भर आता है। उसे अपने बेटी के प्रति अपने कर्तव्य का एहसास होता है। वह सोचती है - ``लोग कहते हैं कि लड़की रजस्वला हो जाये तो मां-बाप-चैन से नहीं सो सकते। और एक मैं हूँ।``[94] तात्पर्य यह कि अंबिका देवी अपने अनैतिक कृत्य पर शर्मिंदा है। उसे पश्चाताप होता है।

कुछ लोग अपने अतीत को भूलकर सुख पाने में सफल होते हैं परंतु कुछ लोगों का अतित हमेशा उनके सम्मुख खड़ा होता है। अंबिका देवी भी अपने अतीत को भूलने की कोशिश करती है परंतु उसका अतीत उसका पीछा नहीं छोड़ता। अतीत का स्मरण होते ही उसका मन पीड़ा से भर उठता है। उसकी मनोदशा का वर्णन करते हुए लेखक ने लिखा है - ``आँखे बंद की तो वह सब आँखों के सामने आया जिसे भूलने इतनी दूर आयी थी। कभी कुछ, कभी कुछ सब इस तरह आता कि घुल-मिलकर उनके जीवन का एक चित्र-सा बनता था।``[95] तात्पर्य विगत काल के दु:खों का स्मरण आदमी को सुखी नहीं होने देता। हमेशा उसकी याद आने पर दु:ख की परछाई उसके साथ आती है।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि मनुष्य के भीतर जो नैसर्गिक काम-भावना निर्माण होती है उसे तृप्त करने की इच्छा होते हुए भी लोक-लाज के कारण विधवा नारी को उसका दमन करना पड़ता है। कोई नारी समाज की मान्यताओं को कुचलकर अपनी लैंगिक इच्छा पूर्ति के लिए अन्य पुरूष के साथ संबंध जोड़ती है तो भी वह अपने कर्तव्य का एहसास होने पर दु:खी हो जाती है। इन्हीं मनोवैज्ञानिक तथ्यों का चित्रण उपर्युक्त कहानियों में किया है।

ञ. वेश्या नारी का मनोविज्ञान :-

भारतीय समाज में विशेषत: महानगरों में वेश्यावृत्ति बड़े पैमाने पर चलती है। वेश्यावृत्ति को समाज का कोढ़ समझा जाता है। समाज में वेश्यावृत्ति के व्यवसाय को घृणित नजरों से देखा जाता है। अपनी हवस को मिटाने की इच्छा से वेश्याओं के पास जानेवाले पुरूष भी वेश्या नारी को जलिल करते हैं। उन्हें नीच, बदजात, रंडी जैसे नामों से पुकारा जाता है। लेकिन दुनिया की जलालत व घृणा तथा अत्याचार को सहते, अपने सीने में दफन करते हुए जीवन बितानेवाली इन वेश्याओं की मानसिक दशा का कोई भी विचार नहीं करता। हर वक्त उसे जलिल किया जाता है। समाज, कानून और व्यक्ति व ग्राहकों द्‌वारा भी उन पर अत्याचार किए जाते हैं। इन वेश्याओं की मानसिक दशा का मनोवैज्ञानिक चित्रण कहानियों के आधार पर किया गया है जो इस प्रकार है -

कोई भी नारी समाज द्‌वारा घृणित समझे जानेवाले इस व्यवसाय को अपनी इच्छा से नहीं स्वीकारती। उसकी कोई मजबूरी होती है या फिर इस व्यवसाय के प्रति आकर्षण व धन कमाने की लालसा की पूर्ति के लिए नारी इस व्यवसाय की तरफ आकर्षित होती है। शब्दकुमार की कहानी `डैड लाईन` की शीनी वेश्यावृत्ति स्वीकारने का कारण बताते हुए कहती है - ``हर चीज के लिए गरीबी को दोष देना उतना ही गलत है जितना हर बात के लिए भाग्य को जिम्मेदार ठहराना।``[96] तात्पर्य यह कि प्रत्येक वेश्या आर्थिक विपन्नता तथा मजबूरी के कारण ही वेश्या नहीं बनती अपितु वेश्या बनने के पिछे नारी की उत्सुकता और काम-वासना की पूर्ति की इच्छा भी होती है।

``अप्राप्य व अनुपलब्ध के प्रति मानव मन का आकर्षण एक मनोवैज्ञानिक सत्य है। प्राप्ति के साथ ही यह आकर्षण धीरे-धीरे कम होने लगता है और एक समय ऐसा भी आता है कि आकर्षण का स्थान ऊब ले लेती है।``[97] तात्पर्य यह कि वेश्यावृत्ति में हमेशा अपने दिलों दिमाग पर पुरूष को झेलते-झेलते शीनी के मन में इस व्यवसाय के प्रति अरूचि निर्माण होती है। इस व्यवसाय को छोड़कर वह फिल्मों में काम करना चाहती है क्योंकि ``हर आत्मा को हर रूह को एक बार में एक ही जिंदगी, एक ही किरदार मिलता है। मेरा मन एक से नहीं भरता, मेरी आत्मा कई जिंदगियाँ जीना चाहती है, कई रूपों में अपने-आपको व्यक्त करना चाहती है।``[98] फिल्मों में काम करके अपनी अभिनयता के बल पर शीनी अनेक रूपों को साकार करना चाहती है। वास्तविक रूप में शीनी अपने वर्तमान व्यवसाय,`वेश्यावृत्ति` से ऊब चुकी है अत: उसे छोड़कर अन्य व्यवसाय में अपना दिल लगाना चाहती है। वह वेश्यावृति के

व्यवसाय में बहुत धन कमा चुकी है और अब धन कमाने की उसकी भूख तथा शौक पूरा हो गया है। उसका कहना है - ``पैसा कमाने का शौक अब खत्म हो चुका है, अपनी खूबसूरती की वाहवाही भी बेमानी लगती है। --- मेरा काम एक एक्टिंग बनकर रह गया है। एक ही तरह का अभिनय करते-करते थक गयी हूँ। अब मेरी अंतरात्मा कुछ कहना चाहती है, अपने-आपको नये-नये रूपों में व्यक्त करना चाहती है।``[99] तात्पर्य यह है कि शीनी के मन में वेश्यावृत्ति के प्रति घृणा निर्माण हो चुकी है अत: वह उसे छोडना चाहती है।

वेश्यावृत्ति को अपनानी वाली युवतियाँ शुरू-शुरू में तो खुश होती हैं क्योंकि अपनी काम-वासना शांत होने के साथ-साथ उन्हें धन भी प्राप्त होता है।आगे चलकर यही खुशी उनकी जरूरत बन जाती है। शीनी अपने बारे में बताती हुई कहती है - ``नयी नजरे, नए स्पर्श, नये जिस्म पहले अच्छे लगे, और फिर एक जरूरत बन गए।``[100] रामदरश मिश्र की कहानी `हद से हद तक` की वेश्या की स्थिति भी ऐसी ही होती है। पहले तो उसे यह व्यवसाय अच्छा लगता है क्योंकि उसे अपने शरीर की कभी न मिटनेवाली आग मिटाने की राह मिल जाती है। उसके बारे में लेखक लिखते हैं - ``खुश थी। पैसे भी मिलते हैं और उसकी भयानक कामज्वाला भी शांत होती है।``[101] परंतु जैसे-जैसे इस व्यवसाय में वह आगे बढ़ती है, इस व्यवसाय के प्रति उसके भी मन में शीनी की तरह अरूचि व घृणा निर्माण होती है। जैसे -``उसकी आग ठंड़ी होती जा रही है। घर लौटती तो थक जाती, देह टूटने लगती। इच्छा हो या न हो, उसे मशीन की तरह ग्राहक की मर्जी पर तैयार होना पड़ता ही है। ऊपर-ऊपर सजाती जा रही है, भीतर-भीतर खाली होती जा रही है।``[102] आश्चर्य यह है कि वेश्यावृत्ति को अपनाने वाली नारी जैसे-जैसे इस व्यवसाय में आगे बढ़ती है वैसे-वैसे इस व्यवसाय के प्रति उसके मन में घृणा निर्माण होती है। उब निर्माण होती है इसी कारण वह इस व्यवसाय को छोड़ना चाहती है।

वेश्यावृत्ति करनेवाली नारी का अनेक मार्गों से आर्थिक व लैंगिक शोषण होता है। इस शोषण के कारण वह पीड़ित होती है। मनोवैज्ञानिक सत्य यह है कि कोई भी आदमी अपनी इच्छा के विरुद्ध होनेवाले कार्य को महसूस कर तडफ उठता है, पीड़ित होता है। नेल्सन एल्ग्रेन की कहानी `तुम्हारी चाहत बस एक रात की` में वेश्या किटी अपने शोषण के बारे में सोचकर उदास होती है। ``वह सोच रही थी पुलिस के बारे में जो कभी भी उसकी गाढ़ी कमाई के पैसों में से अपना `हिस्सा` वसूलने और कुछ मिनटों के लिए उसे रौंदने के लिए चली आती थी। वह सोच रही थी उन राजनैतिक नेताओं के बारे में, जो

उसका पूरा `इस्तेमाल` करने के बाद अपने भाषणों में उसका विरोध करते रहते थे। --- उन डाक्टरों के बारे में, जो उससे दुगुनी फीस वसूल करके भी, उसे घृणा की दृष्टि से देखते थे। -----दलालों के बारे में, जो हमेशा उसके खिलाफ उसे लुटने की साजिशों में लगे रहते हैं। --- उन असंख्य माताओं, बहनों, बेटियों और पत्नियों के बारे में, जिन्होंने उसके खिलाफ एक कभी न खत्म होनेवाली मुहिम छेड़ रखी थी, और हमेशा उसे गालियाँ देते रहते थे।``[103] तात्पर्य यह है कि अपने शोषण के बारे में सोचकर वेश्या पीड़ित होती है।

इन्सान जब दु:खी होता है तो वह अपना मन कही और काम में लगा देता है या फिर गाना गाता है। किटी अपने होनेवाले शोषण पर विचार करके दु:खी व उदास हो जाती है। जब काली घटा को देखती है तो उसकी उदासी दूर हो जाती है और वह अपना प्रिय गाना गुनगुनाने लगती है। शूरू के बोल ``मुझे मत चाहो, क्योंकि तुम्हारी चाहत, बस, एक रात की है।``[104] वेश्या के पास जानेवाला प्रत्येक ग्राहक उससे जाद्य-से-जादा लैंगिक सुख प्राप्त करने की इच्छा से उसकी झूठी तारिफ करता है। उसे चाहने की झूठी बात करता है, परंतु जब अपना काम निबटाकर चला जाता है तो उसे याद तक नहीं रहता कि उसने किस वेश्या को क्या कहा था? उनकी चाहत तो बस एक रात की ही होती है। इन ग्राहकों के कारण वेश्या और भी पीड़ित होती है।

समाज के हर क्षेत्र में वेश्या नारी को घृणा से देखा जाता है अत: समाज में रहनेवाला प्रत्येक व्यक्ति वेश्या को अपनी तो क्या किसी और की भी बहू-पत्नी के रूप में देखना पसंद नहीं करता। इन बातों से वेश्या भी अंजान नहीं है। उनकी मानसिक दशा भी इसी प्रकार की होती है कि वह अपने-आप को किसी की बहू या पत्नी होने के लायक नहीं समझती। अपनी आझाद तबियत और घृणित व्यवसाय के कारण वह किसी के द्वारा शादी का प्रस्ताव रखने पर भी इंकार कर देती है। शब्दकुमार की कहानी `डैड लाईन` की वेश्या शीनी को शादी के बारे में पूछने पर वह बताती है - ``एक -दो बार सोचा। कई अच्छे और मालदार लोगों ने शादी के लिए प्रपोज भी किया। लेकिन अपने भीतर झाँककर देखा कि पत्नी का जीवन मेरे लिए नहीं, मेरी आझाद तबियत मुझे किसी घेरे में बंद होकर नहीं रहने देगी।``[105] तात्पर्य यह कि वेश्या को मौका भी दिया जाए तो वह अपने अतीत हो भूलकर किसी की पत्नी बनकर जीवन नहीं बिता सकती। अपनी आजाद तबियत का उन्हें डर लगता हैं अत: वे शादी करना नहीं चाहती।

अपने अहम् को बचाने के लिए इन्सान अपने अतीत और बुराई से भागता है। इसी प्रकार नरगिस अपने पिता की बदनामी होगी इस डर से एक बार ही किसी लड़के द्वारा खराब होने पर श्रीनगर से भाग आती है। नरगिस न तो खूबसूरत है और न ही पुरूषों को आकर्षित करने जैसा उसके शरीर का बनाव है। परंतु फिर भी पुरूष उसके पास आते हैं। नरगिस कहती है -``मुझे खुद हैरानी होती है कि मर्द मेरे पास क्यों आते हैं, जबकि मैं इतनी यख हूँ।``[106] मर्दों को आकर्षित करनेवाली कोई भी बात नरगिस के पास न होते हुए भी मर्द उसके पास आते हैं, इस कारण नर्गिस हैरान तथा आश्चर्य चकित हो जाती है।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि वेश्या नारी अपने शोषण के कारण पीड़ित व आहत होती है। उसकी कमाई पर जीनेवाले भी उससे घृणा करते हैं इस बात से उसका मन दु:खी होता है। यह मनोवैज्ञानिक सत्य है कि समाज वेश्या को घृणित समझने के कारण वेश्या भी अपने-आपसे घृणा करती है। वह समझती है कि उसका जीवन किसी की पत्नी होकर गुजारा करने जैसा नहीं है उसकी आझाद तबियत उसे चैन से बैठने नहीं देगी। जैसे कि किसी एक कार्य को बार-बार करने के कारण उस काम में अपनी रूचि कम हो जाती है, वेश्याओं की मनोदशा भी उसी प्रकार की होती है। बार-बार अपने दिलो-दिमाग पर ग्राहक के अत्याचार सहते-सहते वेश्या अपने धंधे से ऊब जाती है। वेश्या की पीड़ा, दु:ख, उदासी, दमन, प्रताड़ना आदि बातों का मनोवैज्ञानिक चित्रण कहानियों में मिलता है।

निष्कर्ष :-

`सारिका` पत्रिका की आलोच्य कहानियों में बाल-मनोविज्ञान, युवतियों का मनोविज्ञान, विवाहित नारी का मनोविज्ञान आदि मुद्दों के आधार पर प्रस्तुत कहानियों में चित्रित मनोविज्ञान का विवेचन किया है। कहानियों में नारी की मानसिक कुंठा, दमन, अहम् , स्वप्न द्वारा इच्छा पूर्ति, अंर्तद्वंद्व, भय, संत्रास आदि को सामने रखकर नारी की मनोवैज्ञानिक दशा का चित्रण किया है।

मनोविज्ञान के विराट स्वरूप को जानकर ऐसा प्रतीत होता है कि मनोविज्ञान ने विश्व की सभी साहित्यिक विधाओं को प्रभावित किया है। प्रत्येक प्राणी की मानसिक दशा, उसके क्रिया-कलाप आदि सूक्ष्मातीसूक्ष्म बातों को भी मनोविज्ञान ने नहीं छोडा है। मनोविज्ञान ने इतनी प्रगति की है कि दर्शन शास्त्र की इकाई समझे जानेवाले शास्त्र को पूर्ण रूप से कोई भी मनोवैज्ञानिक इसको सही परिभाषा में बांधने में सफल नहीं हुआ है।

आदमी जहाँ रहता है उस परिवेश का तथा वहाँ के वातावरण एवं जिसके संपर्क में वह रहता है उसके व्यक्तित्व का प्रभाव उसके व्यक्तित्व पर पड़ता है। साधारणत: बच्चों पर ऐसा प्रभाव जल्दी ही दिखाई देता है क्योंकि बच्चे अनुकरण प्रिय होते हैं। अनुकरण से ही वे अपने व्यक्तित्व को बनाने की कोशिश करते हैं।

नारी अपने पर होनेवाले अत्याचार के कारण पीड़ित हो जाती है। उसका व्यक्तित्व दमित भावना से निष्क्रिय बन जाता है परंतु जब वह अपने अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाती है तो किसी को मारने तथा खुद मरने पर उतारु होती है। समाज के डर से नारी अक्सर अपनी लैंगिक इच्छा पूर्ण करने से डरती है। इस इच्छा को पूरा करने के लिए उसे स्वप्न का सहारा लेना पड़ता है। आज साहसी, स्वावलंबी नारी समाज के डर से अपनी इच्छा को दबाती नहीं अपितु इच्छित आदमी के साथ शारीरिक संबंध रखकर अपनी कामेच्छा को तृप्त करती है। परंतु जब उसे अपने कर्तव्य का एहसास होता है तो उसे अपने कृत्य का पश्चाताप होता है। सुख की आशा से गई वह नारी अपने अतीत के याद आते ही दु:खी होकर रोने लगती है।

जीवन में कई बार ऐसी स्थिति आती है कि नारी के सामने दो विकल्प होते हैं और दोनों में से किसी एक को चुनना होता है, तब नारी अंर्तद्‌वद्‌व में फंस जाती है। वह निर्णय नहीं ले पाती। उसका मस्तिष्क उसका साथ नहीं देता अत: वह दमन का सहारा लेती है। अपनी किसी एक इच्छा का दमन कर वह दूसरी का स्वीकार करती है। नौकरी करनेवाली नारी का व्यक्तित्व घर और दफ्तर इन दो जगहों में विभाजित होता है। वह घर की उन्नति के लिए धन प्राप्त करती है अत: चाहती है कि पति भी घर के काम-काज में उसकी मदद करे परंतु अपने अहंकार के कारण पति उसकी मदद नहीं करता तो उसके मन में चीढ़ निर्माण होती है और वह पति से घृणा करने लगती है। पति द्‌वारा पीडित होनेवाली नारी मानसिक शांति के लिए छटपटाती है अत: पति के रहते हुए भी वह किसी और के साथ संबंध जोड़ती है।

भारतीय समाज में कुँआरी लड़की का मातृत्व स्वीकार नहीं किया जाता । जब कोई लड़की कुँआरी माता बन जाती है तो समाज उसकी आलोचना करता है और अहम् को धक्का पहुँचता है। अपने अहम् को बचाने के लिए और समाज के तानों से बचने के लिए नारी समाज से अलग रहने लगती है। वह सोचती है कि समाज में रहकर बेइज्जत होने के बजाय समाज से अलग रहकर ही अपने अहम् को बचाना उचित है।

प्रत्येक इन्सान दु:ख के क्षणों में अपने गत सुखों को याद करता है और उन्हीं सुखों के क्षणों को याद करके पुलकित होकर दु:खों का सामना करता है। यह बात अक्सर नारी में दिखाई देती है। पुरूष स्त्री अपेक्षा नारी अधिक संवेदनशील होती है अत: दु:खों के दौर में आहत होकर गत सुखों को याद करने की प्रवृत्ति नारी में ही जादातर देखने को मिलती है।

नारी पर जब अपनों के द्वारा ही अत्याचार किया जाता है तो वह अत्याचार करनेवाले को नीचा दिखाने के लिए उसके सामने ही ऐसा काम करती है जिसके कारण आदमी के दिल को ठेंस पहुँचे और वह तिलमिला उठे। उसकी तिलमिलाहट व छटपटाहट देखकर नारी को सुख प्राप्त होता है। खुशी मिलती है। ऐसी नारी को `पर पीड़ा सुखी` नारी कहा जाता है। दूसरों की पीड़ा को देखकर सुखानुभूति प्राप्त करनेवाली नारी।

युवावस्था को प्राप्त करने पर युवति के मन में युवक के प्रति आकर्षण निर्माण होता है। दोनों में प्रेम उत्पन्न होता है। प्रेम का परिवर्तन जब विवाह में हो जाता है तो वे खुश होते हैं, परंतु अगर किसी कारण प्रेमी द्वारा प्रेयसी को छोड़ दिया जाता है, उस पर अगर जवानी की गलती हो गई होती तो लडकियाँ दु:खी हो जाती हैं। कोई तो इस सदमें को बर्दाश्त न कर आत्महत्या करती है और कोई अपनी और परिवार की इज्जत बचाने की खातिर भाग जाती है या वेश्यावृत्ति को अपनाती है। वेश्यावृत्ति को अपनाने वाली वेश्या नारी पहले-पहले तो इस व्यवसाय को लेकर खुश रहती है क्योंकि उसकी कामवासना के साथ-साथ धन प्रापित की भी पूर्ति इस व्यवसाय द्वारा होती है। परंतु जैसे-जैसे उसकी शारीरिक आग ठंडी हो जाती है वैसे-वैसे वह इस व्यवसाय से ऊब जाती है तथा वेश्यावृत्ति के बारे में उसके मन में घृणा निर्माण होती है।

आलोच्य कहानियों में नारी में पायी जानेवाली, कुंठा, डर, दमन, पीडा, अंतर्द्वंद्व, उदात्तता, कामवासना, क्रोध, बदले की भावना आदि मनोवैज्ञानिक तथ्य का चित्रण हुआ ह

:संदर्भसूची :

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल -हिंदी साहित्य का इतिहास ,पृ. 322
2. गणपतिचंद्र गुप्त -हिंदी भाषा एवं साहित्य विश्वकोश,पृ. 507
3. वही, वही,पृ. 507
4. वही, वही, पृ. 507
5. वही, वही, पृ. 507
6. वही, वही, पृ. 507
7. वही, वही, पृ. 507
8. वही, वही, पृ. 507
9. वही, वही, पृ. 507
10. प्र. बी. आर. प्रकाशन कं. - हिंदी विश्वकोश, पृ. 604
11. प्र. आदीशकुमार जैन - नालंदा विशाल शब्दसागर , पृ. 1059
12. सं. श्यामसुंदरदास - हिंदी शब्दसागर (आठवां भाग) , पृ. 3790
13. डॉ. कमला आत्रेय - आधुनिक मनोविज्ञान और सूर काव्य, पृ. 17
14. वही, वही, पृ. 17
15. गणपतिचंद्र गुप्त - हिंदी भाषा एवं साहित्य विश्वकोश, पृ. 508
16. वही, वही, पृ. 508
17. वही, वही, पृ. 508
18. डॉ. कमला आत्रेय - आधुनिक मनोविज्ञान और सूर काव्य , पृ. 41
19. वही, वही, पृ. 40
20. कमला आत्रेय - आधुनिक मनोविज्ञान और सूर काव्य, पृ. 47
21. वही, वही, पृ. 42
22. वही, वही, पृ. 43
23. वही, वही, पृ. 44

24. वही, वही, पृ. 44

25. वही, वही, पृ. 43

26. वही, वही, पृ. 44

27. वही, वही, पृ. 54

28. हेतु भारद्वाज - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में मानव प्रतिमा , पृ. 97

29. जसबीर चावला -फ्रॉक का रंग , `सारिका` देह-व्यापार -कथा विशेषांक चार, पृ. 40

(वर्ष 23, अंक : 340)

30. वही, वही, पृ. 41

31. वही, वही, पृ. 40

32. यशपाल - फूलो का कुरता , `सारिका` जब्तशुदा कहानियाँ विशेषांक दो, पृ. 24

(वर्ष 21, अंक : 389)

33. डॉ. कमला आत्रेय - आधुनिक मनोविज्ञान और सूर काव्य, पृ. 26

34. इस्मत चुगताई - `लिहाफ`, `सारिका`, जब्तशुदरा कहानियाँ विशेषांक दो, पृ. 43

(वर्ष 21, अंक : 289)

35. वही, वही, पृ. 43

36. मंटो - नरगिस, `सारिका`, देह-व्यापार -कथा विशेषांक-एक, पृ. 24

(वर्ष 22, अंक : 315)

37. हरमन चौहान - छाग, `सारिका`, देह-व्यापार -कथा विशेषांक तीन, पृ. 87

(वर्ष 22, अंक : 317)

38. वही, वही, पृ. 87

39. यशपाल - `धर्मरक्षा`, `सारिका`, जब्तशुदा कहानियाँ विशेषांक एक, पृ. 16

(वर्ष 21, अंक : 288)

40. वही, वही, पृ. 17

41. वही, वही, पृ. 17.

42. रामदरश मिश्र - हद से हद तक , `सारिका`, नारी-यातना-कथा विशेषांक दो, पृ. 32

(वर्ष 22, अंक : 323)

43. वही, वही, पृ. 32

44. वही, वही, पृ. 31

45. वही, वही, पृ. 31

46. डॉ. शकुंतला चव्हाण - यशपाल साहित्य में कामचेतना, पृ. 174

47. श्याम निर्मम - सापं सीढ़ी, `सारिका`, नारी-यातना-कथा विशेषांक एक, पृ. 60

(वर्ष 22, अंक : 322)

48. वही, वही, पृ. 60

49. डॉ.कमला आत्रेय - आधुनिक मनोविज्ञान और सूर काव्य , पृ 53

50. श्याम निर्मम - सांप सीढ़ी, `सारिका`, नारी-यातना-कथा विशेषांक एक, पृ. 60

(वर्ष 22, अंक : 322)

51. वही, वही, पृ. 60

52. मधु किश्वर - बीस या पच्चीस, `सारिका`, नारी-यातना-कथा विशेषांक एक, पृ. 86

(वर्ष 22, अंक : 322)

53. वही, वही, पृ. 86

54. डॉ. कमला आत्रेय - आधुनिक मनोविज्ञान और सूर काव्य, पृ. 44

55. मधु किश्वर -बीस या पच्चीस, `सारिका`, नारी-यातना-कथा विशेषांक एक, पृ. 86

(वर्ष 22, अंक : 322)

56. सुनंत कौर - समकालीन हिंदी कहानी स्त्री-पुरूष संबंध , पृ. 87

57. अशोक गुप्ता - काली खुशबु का फूल, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक- दो, पृ. 35

(वर्ष 22, अंक : 316)

58. वही, वही, पृ. 35

59. बूटा सिंह - तीन सतियाँ, `सारिका`, नारी-यातना-कथा विशेषांक एक, पृ. 69

(वर्ष 22, अंक : 322,)

60. सत्यपाल सक्सेना - अंधेरे के विरूद्ध, `सारिका`, नारी-यातना-कथा विशेषांक - दो, पृ. 64

(वर्ष 22, अंक : 323)

61. वही, वही, पृ. 66

62. बूटा सिंह - तीन सतियां, `सारिका`, नारी-यातना-कथा विशेषांक एक, पृ. 64

(वर्ष 22, अंक : 322)

63. वही, वही, पृ. 66

64. जगवीर सिंह वर्मा - आधी उम्र की पूरी औरत, `सारिका`, नारी-यातना-कथा विशेषांक एक, पृ. 92

(वर्ष 22, अंक : 322)

65. वही, वही, पृ. 92

66. वही, वही, पृ. 92

67. वही, वही, पृ. 93

68. शकुंतला चव्हाण - यशपाल साहित्य में कामचेतना, पृ. 75

69. कर्तारसिंह दुग्गल - करवा चौथ, `सारिका`, नारी-यातना-कथा विशेषांक - एक, पृ. 14

(वर्ष 22, अंक : 322)

70. वही, वही, पृ. 14

71. वही, वही, पृ. 15

72. योगेश सूरी - यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ, पृ. 91

73. सत्येंद्र त्यागी - शट अप सर!, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक -दो, पृ. 63

(वर्ष 22, अंक : 316)

74. वीर राजा - बदकार, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक - चार, पृ. 47

(वर्ष 23, अंक : 340)

75. वही, वही, पृ. 47

76. डॉ. शकुंतला चव्हाण - यशपाल साहित्य में कामचेतना, पृ. 75

77. क्वीनी ठाकूर- जानकी, `सारिका`, नारी-यातना-कथा विशेषांक- दो, पृ. 57

(वर्ष 22, अंक : 323)

78. वही, वही, पृ. 59

79. वही, वही, पृ. 59

80. नासिरा शर्मा -दस्तक, `सारिका`, नारी-यातना-कथा विशेषांक- दो, पृ. 24

(वर्ष 22, अंक : 323)

81. वही, वही, पृ. 24

82. वही, वही, पृ. 24

83. सुनंत कौर - समकालीन हिंदी कहानी स्त्री-पुरूष संबंध, पृ. 150

84. हरमन चौहान - `छाग`, `सारिका` देह-व्यापार-कथा विशेषांक- तीन, पृ. 26

(वर्ष 22, अंक : 317)

85. महेश दर्पण - बलात्कार : हर औरत पर दोहरी मार, `सारिका`, नारी-यातना-कथा विशेषांक दो

(वर्ष 22, अंक : 323) पृ. 70

86. बीर राजा - भोली, `सारिका`, नारी-यातना-कथा विशेषांक एक, पृ. 31

(वर्ष 22, अंक : 322)

87. वही, वही, पृ. 31

88. वही, वही, पृ. 32

89. महेश दर्पण -बलात्कार : हर औरत पर दोहरी मार , `सारिका`, नारी-यातना-कथा विशेषांक दो

(वर्ष 22, अंक : 323) पृ. 71

90. सुनंत कौर - समकालीन हिंदी कहानी स्त्री-पुरूष संबंध, पृ. 141

91. वही, वही, पृ. 141

92. डॉ. कमला आत्रेय - आधुनिक मनोविज्ञान और सूर काव्य, पृ. 90

93. जगवीर सिंह वर्मा - आधी उम्र की पूरी औरत, `सारिका`, नारी-यातना-कथा विशेषांक एक

(वर्ष 22, अंक : 322)पृ. 22

94. आरिगपूडि - उलझे संबंध, `सारिका`, नारी-यातना-कथा विशेषांक एक, पृ. 22

(वर्ष 22, अंक : 322)

95. वही, वही, पृ. 22

96. शब्दकुमार - डैड लाईन, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक तीन, पृ. 41

(वर्ष 22, अंक : 317)

97. सुनंत कौर - समकालीन हिंदी साहित्य स्त्री-पुरूष संबंध, पृ. 76

98. शब्दकुमार - `डैडलाईन`, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक तीन, पृ. 39

(वर्ष 22, अंक : 317)

99. वही, वही, पृ. 41

100. वही, वही, पृ. 41

101. रामदरश मिश्र - हद से हद तक , `सारिका`, नारी-यातना-कथा विशेषांक दो, पृ. 35

(वर्ष 22, अंक : 323)

102. वही, वही, पृ. 35

103. नेल्सन एल्ग्रेन - तुम्हारी चाहत बस एक रात की, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक चार

(वर्ष 23, अंक : 340) पृ. 18

104. वही, वही, पृ. 19

105. शब्दकुमार - डैडलाईन, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक तीन, पृ. 41

(वर्ष 22, अंक : 317)

106. सआदत हसन मंटो - नरगिस, `सारिका`, देह-व्यापार-कथा विशेषांक एक, पृ. 24

(वर्ष 22, अंक : 315)

****